thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१७, अंकः-८-९; फरवरी-मार्च(संयुक्तांक), सन्-२०१५, सं०-२०७१ वि०, दयानंदाब्द १९१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११५; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

ऋषि दयानन्द हिन्दू-जाति ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण भारत के उद्धारकर्त्ता हैं!

अनेक धार्मिक-ग्रंथों की आलोचना उनके विचार-स्वातंत्र्य का सुन्दर उदाहरण है!

-अध्यापक जहूर बख्श-

आज मेरे समक्ष यह प्रश्न उपस्थित है कि मैं ऋषि का आदर क्यों करता हूँ? इच्छा न रहते हुए भी, मुझे इस सरल प्रश्न का उत्तर देने के लिए विवश होना पड़ा है। गत वर्ष के ऋष्यंक में मेरा 'ऋषि का ऋण' शीर्षक लेख देख कर मेरे कई मित्रों को बड़ा आश्चर्य, कौतूहल और क्षोभ हुआ था। कई एक ने तो मुझे दिल खोलकर फटकार भी खिलाई थी। एक सनातनधर्मी महाशय ने कहा था-'जिसने सनातनधर्म को तीन- तेरह कर डाला, उसे आप हिन्दुओं का उद्धारकर्त्ता बतलाते हैं- इससे बढ़कर अज्ञान की बात और क्या होगी!' दूसरे महाशय जो सुलेखक और विशेष विचारवान् होने का दम भरते हैं; कहते थे-'पुरस्कार में दस-पाँच रुपये फटकार लिए होंगे- इसी से ऐसा लिख मारा; आदमी रुपये के लिये क्या नहीं कर डालता?' यह सुन तीसरे सज्जन ने फरमाया-'सो तो हई है, और आजकल हिन्दू-पत्रिकाओं ने आपके लेख छापना भी बन्द कर दिया है, फिर बेचारे आर्य समाजियों के यहाँ चक्कर न काटें, तो क्या करें?' एक आर्यसमाजी महाशय ने कहा था-'आश्चर्य है कि ऋषि पर ऐसा पवित्र भाव रखते हुए भी आप अब तक मुसलमान बने हुए हैं- अबतक तो आपको अपनी शुद्धि करा लेनी चाहिए थी!' तब दूसरे ने कहा-'अच्छा, यह तो बतलाइये कि ऋषि का यह गुणगान करने में आपको कितना मिहनताना मिला है?' तीसरे समझदार सज्जन ने सम्मति दी-'यदि आपने किसी मुस्लिम-पत्रिका में यह लेख छपाया होता, तो उत्तम होता- कम-से-कम आपके मुसलमान भाइयों की आँखें तो खुल जातीं!' एक सजातीय भाई कहते थे-'जिसने इस्लाम की जड़ पर कुल्हाड़ी चलाने वाला एक फिरका खड़ा कर दिया-आप उसी की तारीफ के पुल बाँधने बैठ गये! अफसोस!' मुस्लिम भाई की बात जाने दीजिए; लेख लिखने के पूर्व मुझे इस बात का अनुभव भी न हुआ था कि मुझे हिन्दू नामधारी सज्जनों से ऐसे व्यंग्य-वचन पुरस्कार में प्राप्त होंगे! 'ऋषि के ऋण' पर मुझे क्या पुरस्कार मिला था, यह तो मेरे और सम्पादक 'आर्यमित्र' के बीच की बात है।* हिन्दू-पत्रिकाएँ मेरे लेख अब भी छापती हैं, या नहीं, इसके कहने की भी जरूरत नहीं। रही यह बात कि ऋषि दयानन्द हिन्दू जाति का उद्धारकर्त्ता था, सो इस पर तो मेरा यही दृढ़ मत है कि न केवल हिन्दू-जाति का, वरन् भारत का उद्धारकर्त्ता था। यदि हिन्दू-जाति ने उसके मिशन का तथ्यपूर्ण उद्देश्य समझ लिया होता, तो भारत का न जाने, अब तक कितना उद्धार हो गया होता!

ऊपर दी हुई सम्मतियाँ किसी भी सहृदय व्यक्ति का हृदय मथने की पूर्ण शक्ति रखती हैं। मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि 'ऋषि के ऋण' से दबी हुई, पतित हिन्दू जाति के कितने ही पढ़े-लिखे, पर मुर्दा जीव मेरे लेख का तात्पर्य न समझ सके। सच पूछिए, तो ऊपर दी हुई सम्मतियाँ मनुष्य की उस विनाशकारी प्रवृत्ति का परिचय देती हैं, जो उसे शनैः शनैः उस अन्धकार में ले जाती हैं, जहाँ वह प्रकाश की एक क्षीण रेखा का दर्शन प्राप्त करने के लिए आकुल हो उठता है। अन्त में उस गहन अन्धकार में ही वह पंचतत्त्व को प्राप्त हो जाता है। भारतवासी क्रमशः उसी अन्धकार की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं।

यह कितने दुःख की बात हे कि यदि कोई हिन्दू महात्मा, ईसा या हजरत मोहम्मद साहब, के चरित्र पर मुग्ध होकर उनका आदर करे, तो उससे कहा जाय-'आश्चर्य की बात है कि आप अब तक ईसाई या मुसलमान क्यों नहीं हुए!' इसी प्रकार महर्षि दयानन्द की प्रशंसा करने वाले किसी अन्य धर्मी से 'आपने अभी तक अपनी शुद्धि क्यों नहीं कराई?' कहना अनुचित है, उसे परोक्षतया ऋषि की प्रशंसा करने से रोकना है। मेरा विश्वास है कि जो जाति या जो व्यक्ति गुणों का आदर करना- उनका अनुकरण करना जानता है, उसका पतन असम्भव है! हिन्दू-जाति के पतन का एक कारण यह भी है कि उसने गुणों का मूल्य समझना- उनका अनुकरण करना छोड़ दिया है। हिन्दू जाति भंगी को अछूत एवं कमीन समझती है। अब कल्पना कीजिये, कि किसी भंगी में बड़े ही सद्गुण हैं। उसका आचरण बड़ा पवित्र है, वह बड़ा ही नम्र एवं मधुर-भाषी है, बड़ा ही दयालु और परोपकारी है; बतलाइए आप उसके इन गुणों की प्रशंसा करेंगे या निन्दा? उसके चरित्र को अनुकरणीय समझेंगे या नहीं? जब अपने चरित्र-बल से एक अस्पृश्य भंगी तक आदरणीय या अनुकरणीय हो सकता है, तब संसार के महापुरुषों के विषय में तो कहना ही क्या? उनका पावन-चरित्र, किसी जाति, सम्प्रदाय या राष्ट्र-विशेष की ही सम्पत्ति नहीं होता। उन पर कोई जाति, सम्प्रदाय या राष्ट्र भले ही गर्व कर ले, पर उन पर सारे संसार का आधिपत्य हो सकता है, सारे संसार के, प्रत्येक धर्म और समाज के व्यक्ति उनका सम्मान कर सकते हैं, आनन्दपूर्वक उनके चरित्र का अनुकरण कर अपना जीवन सफल कर सकते हैं। प्रसन्नता की बात तो यह है कि ऋषि दयानन्द का चरित्र इसी उच्च कोटि का था। अतः यदि चाहें तो संसार के सभी व्यक्ति अपने-अपने धर्म का पालन करते हुए भी उसका आदर कर सकते हैं- उसका अनुकरण कर अपना जीवन पवित्र बना सकते हैं। तब यदि मैं स्वामी दयानन्द का सम्मान करता हूँ, उसमें भक्ति भाव रखता हूँ, तो क्या बुरा करता हूँ? क्या इसका यह मतलब हुआ कि मैं हजरत मोहम्मद साहब को आदरणीय और अनुकरणीय नहीं समझता? मैं चाहूँ तो हजरत मोहम्मद साहब के चरण-चिन्हों पर पथ-गमन करते हुए भी ऋषि पर भक्ति-भाव रख सकता हूँ। अपने धर्म पर प्यार करते हुए भी ऋषि दयानन्द या उसके मिशन से द्वेष भाव रखकर अपने हृदय को कलुषित करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

ऋषि दयानन्द के देवोपम चरित्र में अनेक सद्गुणों का विकास इस प्रकार हुआ है, कि वह मुझे बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। कुछ लोग महर्षि के जिस सद्गुण को एवं उसके विकास को दोष समझते हैं, उसे ही मैं एक महत् और आवश्यकीय गुण समझता हूँ। बालक मूलशंकर की शिवरात्रि सम्बन्धी घटना को लेकर, ऋषि दयानन्द की पुराण, कुरान, बाइबिल आदि की स्वतन्त्रालोचना तक, लोग उस पर विचार स्वातंत्र्य और अन्य धर्मों पर घृणात्मक दृष्टि का लांछन लगाते हैं! परन्तु उसने कब और कहाँ अन्य धर्मों पर घृणात्मक दृष्टि की है- मुझे तो इसका पता नहीं चलता। उसने यह तो कहीं नहीं कहा कि अमुक धर्म बुरा एवं घृणा योग्य है, अतः उस धर्म के अनुयायी उसे मानना छोड़ देवें। उसने 'सत्यार्थ प्रकाश' में अन्य धर्म सम्बन्धी जिन ग्रन्थों की आलोचना की है, वह उसके विचार-स्वातंत्र्य का सुन्दर उदाहरण है। स्मरण रखना चहिए, कि विचार-स्वातंत्र्य कोई भयंकर वस्तु नहीं। उसी से संसार में युगान्तर उपस्थित होता है-वही संसार को उत्थान के मंच पर ले जाता है। विचार-स्वातंत्र्य से घबराना कोरी कायरता है। यदि ऋषि ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में अन्य धर्मों की स्वतंत्र आलोचना की है, तो पुण्य-कर्म ही किया है। अन्य धर्म वालों को उससे न तो घबराना चाहिए न चिढ़ना ही चाहिए। उनका कर्त्तव्य है कि वे स्थिर चित्त से उस पर विचार करें, और उन्हें यदि ऋषि के बतलाए हुए दोष ठीक जँचें, तो प्रसन्नता पूर्वक अपने धर्म का संस्कार करें। इससे तो उन्नति ही होगी। अतः ऋषि की विचार-स्वतंत्रता पुण्य-वस्तु है। संसार उससे लाभ उठा सकता है। क्या ऋषि का यह गुण सम्मान योग्य नहीं?

ऋषि के हृदय में अदम्य साहस की वेगवती सरिता प्रवाहित हो रही थी। संसार के सामने अपने स्वतन्त्र विचार प्रस्तुत कर उसने यह भली भाँति दर्शा

शेष पृष्ठ 3 पर.....

अध्यापक जी को पुरस्कार देने की बात बिलकुल गलत है। उन्होंने तो वह लेख हमारा विनम्र निवेदन स्वीकार करके ही भेजा था, जिसका पुरस्कार सिवाय हमारी हार्दिक कृतज्ञता के न कुछ था और न अब है। -सम्पादक

विनय पीयूष

मधु सा जीवन मधुर बनाऊँ !

मधुमन्मे निक्रमणं, मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद्, भूयासं मधु सन्दृश।।

(अथर्व० 1/34/3)

मधु सा जीवन मधुर बनाऊँ !

हो निवृत्ति भी
मेरी मधुमय।
हो प्रवृत्ति भी
मेरी मधुमय।

मधुर-मधुर वाणी मैं बोलूँ,
मधु सा मधुर-मधुर बन जाऊँ।

काव्यानुवाद : अमृत खरे

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आर्यावर्त्त कोई चारागाह नहीं है!

श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शासन सूत्र सँभालने के बाद अतिरिक्त एवं असंयमित उत्साह का प्रदर्शन करने वाले विश्व हिन्दू परिषद तथा संघ परिवार के कतिपय मुखर वाग्मी यह बयान दे रहे हैं कि दो हजार वर्ष पूर्व इस देश मे हिन्दुओं के अलावा कोई और नहीं रहता था- हिन्दू धर्म के अलावा कोई अन्य धर्म भी यहाँ नहीं था। अत्यंत विनम्रता के साथ अपने इन माननीय कर्मठ और तपेतपाये मुखर नेताओं से निवेदन करना चाहता हूँ कि वे बहुत बड़े भ्रम में हैं। अथवा जानते हुए भी एक बहुत बड़ी सच्चाई पर पर्दा डालना चाहते हैं। वास्तविक तथ्य है कि दो हजार वर्ष पूर्व तो इस देश में 'हिन्दू' शब्द का प्रचलन भी नहीं हुआ था। हिन्दुओं को 'आर्य' कहा जाता हे, इस देश को भारतवर्ष और आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था; एशिया महाद्वीप को 'जम्बूद्वीप' कहा जाता था। 'हिन्दू धर्म' नाम का कोई धर्म भी प्रचलन में नहीं था- हाँ, आर्य नामधारी हिन्दू जिस धर्म का पालन करते थे- उसे वैदिक धर्म या सत्य सनातन वैदिक धर्म कहा जाता था। 'हिन्दुओं' के मूल धर्म ग्रंथ 'वेद' जिसे अपौरुषेय, स्वतःप्रमाण अथवा Fundamental Authority कहा जाता था- स्पष्ट रूप से विश्व को आर्य बनाने की प्रेरणा दे रहे हैं- 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'। वेदों का बड़ा ही पवित्र और उपयोगी संदेश है। जिसका पालन करते हुए आज भी महामना मदन मोहन मालवीय द्वारा निर्मित काशी विश्वनाथ मंदिर के द्वार पर यह शब्द अंकित है- 'आर्य धर्मेतराणां प्रवेशो निषिद्धः' अर्थात् आर्यधर्म के इतर व्यक्ति मंदिर में प्रवेश न करें- यहाँ भी 'हिन्दू' धर्म का उल्लेख नहीं किया गया है। इसका कारण भी यही है- हिन्दुओं का धर्म वैदिक धर्म अथवा आर्यधर्म कहा जाता था।

हमारे विश्व हिन्दू परिषद तथा संघ परिवार में मान्य नेतागणों द्वारा सृष्टि के प्रारंभ से लगभग एक अरब ९६ करोड़ ८ लाख, ५३ हजार, ११५ वर्ष से हमारे पूर्वजों, पंडितों, पुराहितों और ऋषियों तथा मुनियों द्वारा प्रत्येक शुभकार्य अथवा संस्कार के प्रारंभ में यजमानों द्वारा कहलाये जाने वाले संकल्पोंच्चारण की शब्दावली को नजरंदाज कर देना और श्रद्धा विश्वास भरे आज के हिन्दू समाज को दिग्भ्रम में डाल देना कहाँ तक उचित है? इस प्रश्न पर विचार करना अत्यावश्यक है। संकल्पोच्चारण में स्पष्टतया 'जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्तेकै देशान्तर्गते' शब्दों का प्रयोग किया जाता है- जिसका स्पष्ट अर्थ है कि एशिया महाद्वीप का नाम जम्बूद्वीज और इस देश का नाम भारतवर्ष अथवा आर्यावर्त था।

आप जबरन भारत भूमि पर जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को 'हिन्दू' कहने के लिए भला कैसे बाध्य कर सकते हैं; जब तक वह स्वेच्छा से अपने को 'हिन्दू' मानने को तैयार न हो किन्तु आर्य शब्द के साथ यह बाध्यता नहीं है। 'आर्य' नाम है उत्तम पुरुषों का और उत्तम पुरुष बनने में किसी को भी क्या परहेज हो सकता है- वह ईसाई मुसलमान सिख जैन बौद्ध पारसी कोई भी क्यों न हो? हर व्यक्ति 'उत्तम' कहलाने के लिए बेहिचक तैयार हो सकता है।

आप स्वामी विवेकानन्द जी की बात करते हैं तो उन्हें जिस शब्दावली और भावभूमि ने प्रेरित किया था उस पर ध्यान दें। विश्व में हिन्दुत्व की दुंदुभी बजाने वाले स्वामी विवेकानन्द को मौलिक प्रेरणा उनके पूर्ववर्ती महर्षि दयानन्द सरस्वती के इन वाक्यों से मिली थी जो अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के एकादशवें समुल्लास के प्रारंभ में अंकित है-

''यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिये इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिए सृष्टि की आदि में आर्य लोग इसी देश में आकर बसे। इसलिये हम सृष्टि विषय में कह आये हैं कि आर्य नाम उत्तम पुरुषों का है और आर्यों से भिन्न मनुष्यों का नाम दस्यु है। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। सृष्टि से ले के पांच सहस्र वर्षों से पूर्ण समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था।''

महर्षि लिखते हैं, 'जब रघुगण राजा थे; तब रावण भी यहाँ के आधीन था। जब रामचन्द्र के समय में विरुद्ध हो गया तो उसको रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उसके भाई विभीषण को राज्य दिया था।' वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा काण्ड मे बालि के प्रश्नों का उत्तर देते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र उत्तर देते हैं :

इक्ष्वाकूमियं भूमिः सशैल वन कानना।
मृग पक्षि मनुष्याणां निग्रहानुग्रहेष्यपि।
तं पालयति धर्मात्मा सत्यदागृजुः।
धर्म कामार्थ तत्वज्ञो निग्रहानुग्रहेरतः।।

वन उपवन पर्वतों नदियों से ढकी हुई इस धरती पर जो भी मृग-पक्षी-पशु मनुष्य आदि निवास करते हैं; उसका पालन और नियंत्रण-नियमन करने का अधिकार हम इक्ष्वाकुवंशियों को परम्परा से प्राप्त है। आज महात्मा भरत इस धरती पर शासन कर रहे हैं- उन्हीं की व्यवस्थानुसार मुझे अन्यायी को दण्डित करने और न्याय की रक्षा करने का अधिकार प्राप्त है।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१५५

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

अद्वैतवाद का खण्डन

(प्रश्न) तो आप तच्छब्द से क्या लेते हैं?

(उत्तर) 'स य ऐषोणिमैतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्य स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति।।' छान्दो.।।

वह परमात्मा जानने योग्य है। जो यह अत्यन्त सूक्ष्म और इस सब जगत् और जीव का आत्मा है। वही सत्यस्वरूप और अपना आत्मा आप ही है। हे श्वेतकेतो प्रियपुत्र! तदात्मकस्तदन्तर्यामी त्वमसि।

उस परमात्मा अन्तर्यामी से तू युक्त है। यही अर्थ उपनिषदों से अविरुद्ध है क्योंकि-

य आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोऽन्तरो यमात्मा न वेद यस्यात्मा शरीरम्। आत्मनोऽन्तरो यमयति स त आत्मान्तर्याम्यमृतः।

यह बृहदारण्यक का वचन है। महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी स्त्री मैत्रेयी से कहते हैं कि हे मैत्रेयि! जो परमेश्वर आत्मा अर्थात् जीव में स्थित और जीवात्मा से भिन्न है; जिसको मूढ़ जीवात्मा नहीं जानता कि वह परमात्मा मेरे में व्यापक है; जिस परमेश्वर का जीवात्मा शरीर अर्थात् जैसे शरीर में जीव रहता है वैसे ही जीवन में परमेश्वर व्यापक है; जीवात्मा से भिन्न रहकर जीव के पाप पुण्यों का साक्षी होकर उनके फल जीवों को देकर नियम में रखता है; वहीं अविनाशी स्वरूप तेरा भी अन्तर्यामी

आत्मा अर्थात् तेरे भीतर व्यापक है; उसको तू जान। क्या कोई इत्यादि वचनों का अन्यथा अर्थ कर सकता है?

'अयमात्मा ब्रह्म' अर्थात् समाधिदशा में जब योगी को परमेश्वर प्रत्यक्ष होता है तब वह कहता है कि यह जो मेरे में व्यापक है वही ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है। इसलिये जो आजकल के वेदान्ती जीव ब्रह्म की एकता करते हैं वे वेदान्तशास्त्र को नहीं जानते।

(प्रश्न) अनेन आत्मना जीवेनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि।।छां।।

तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्।तैत्ति.।।

परमेश्वर कहता है कि मैं जगत् और शरीर को रचकर जगत् में व्यापक और जीवरूप हो के शरीर में प्रविष्ट होता हुआ नाम और रूप की व्याख्या करूं।। परमेश्वर ने उस जगत् और शरीर को बना कर उसमें वही प्रविष्ट हुआ। इत्यादि श्रुतियों का अर्थ दूसरा कैसे कर सकोगे?।।

(उत्तर) जो तुम पद, पदार्थ और वाक्यार्थ जानते तो ऐसा अनर्थ कभी न करते! क्योंकि यहां ऐसा समझो कि एक प्रवेश और दूसरा अनुप्रवेश अर्थात् पश्चात् प्रवेश कहाता है। परमेश्वर शरीर में प्रविष्ट हुए जीवों के साथ अनुप्रविष्ट के समान होकर वेद द्वारा सब नाम रूप आदि की विद्या को प्रकट करता है। और शरीर में जीव को प्रवेश करा आप जीव के भीतर अनुप्रविष्ट हो रहा है। जो तुम अनु शब्द का अर्थ जानते तो वैसा विपरीत अर्थ कभी न करते। (क्रमशः)

वेद प्रवचन

सफल जीवन और उषा

❑ पं. शिव कुमार शास्त्री
भू.पू. संसद सदस्य

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती। यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।। (साम० : 421)

शब्दार्थ-

(**सत्यश्रवसि**) ठीक-ठीक श्रवण करने वाली (**सुजाते**) शोभा-सम्पन्न जन्म से युक्त (**अश्वसूनृते**) श्रुति-मधुर शब्दों से भरपूर (**वाय्ये**) विस्तृत (**उषः**) प्रभात-वेला (**यथाचित्**) जिस प्रकार (**नः**) हमको (**अबोधयः**) पहले के समान जगाने वाली (**अद्य**) अब भी (**दिवित्मती**) प्रकाश वाली तू (**महेराये**) महान् धन-धान्यादि ऐश्वर्य के लिए (**नः**) हमको (**बोधय**) जगा!

व्याख्या-

इस मंत्र में उषःकाल का बहुत ही चमत्कारपूर्ण प्राकृतिक सौन्दर्य और प्रभाव का वर्णन किया गया है। दूसरे क्रम पर ब्राह्ममुहूर्त्त में जागकर आवश्यक कार्यों से निवृत्त होना सफलता और स्वास्थ्य दोनों दृष्टियों से ही उत्तम है। तीसरे, देवियाँ उषः-समय के गुणों को धारण कर घरों को सुखमय तथा शोभायुक्त बना सकती हैं।

मंत्र में उषः के तीन महत्वपूर्ण विशेषण हैं, जो उसके उत्कर्ष पर प्रभाव डालते हैं। पहला है '**सत्यश्रवसि**'-ठीक-ठीक श्रवण करनेवाली। इसका एक भाव यह है कि प्रातः के समय शब्द दूरगामी तथा स्पष्ट सुनाई देनेवाला होता है। दूसरा इसका भाव यह भी है कि इस समय सुना हुआ शब्द भले प्रकार मनन किया जाता है। शब्द-प्रयोग का लक्ष्य भी मनन शक्ति को उद्बुद्ध करने का ही होता है। यदि उच्चरित शब्द विचारशक्ति को प्रभावित नहीं करते तो उनका उच्चारण और श्रवण दोनों निरर्थक हैं। इसके अतिरिक्त प्रातः स्मरण किया पाठ, शीघ्र स्मृति पटल पर अंकित हो जाता है और शीघ्र विस्मृत नहीं होता, अतः उषः श्रवण, मनन और स्मरण के लिए सर्वोत्तम समय है।

दूसरा विशेषण है-'**सुजाते**-शोभन सुन्दर जन्मवाली। उषःकाल का समय प्रकृति में शोभा और सौन्दर्य को भर देता है। जिस ओर दृष्टि डालिये, इस समय का मनोहर दृश्य नयनाभिराम होता है। स्वर्णिम प्राची संसार की प्रत्येक वस्तु को सुनहरा बना रही है। बहते हुए नदी के प्रवाह में उसकी शोभा कुछ और ही प्रकार की होती है। वनस्थली की दूर्वा पर झिलमिलाते ओसकण अपना अनोखा सौन्दर्य बिखेर रहे होते हैं। इस शोभा को देखकर ही किसी शायर ने लिखा था-

उफ़ री शबनम! इस क़दर नादानियाँ?
मोतियों को घास पर फैला दिया?

इस समय न केवल ओस-कण दूब पर मोती-से झिलमिलाते हैं, अपितु रात को वृक्षों ओर वनस्पतियों पर पड़ी हुई ओस बूँद-बूँद करके टपकने लगती है। उधर फूल भी खिलने लगते हैं। इस दृश्य का भी किसी शायर का मनोरम शब्दचित्र देखिये-

दूसरों के दर्द का अहसास होता है किसे!
हँस दिया करते है गुल शबनम को रोता देखकर।।

अस्वस्थ-से-अस्वस्थ व्यक्ति का भी इस वेला में रोग का प्रकोप कम हो जाता है। मन में कुछ उत्साह संचारित हो जाता है। इस प्रकार विचारने पर यह '**सुजाता** विशेषण बहुत स-सार और सार्थक है। इसके आगे तीसरा विशेषण है '**अश्वसूनृते**-श्रुतिमधुर शब्दों से भरपूर। यह विशेषण भी कमाल का है। इस समय नाना प्राकर के पक्षी मस्त होकर गाते हैं। कुक्कुट की उदात्त, अनुदात्त और प्लुत से युक्त तीव्र ध्वनि, कोयल की अमृतवर्षिणी स्वरलहरी, केवल ब्राह्म मुहूर्त में बोलनेवाली एक विशेष चिड़िया की कानों को मीठी लगने वाली, ध्वनि, पौ फटने पर एक-साथ चहचहाने वाले पक्षियों का कलरव और न जाने कितने प्रकार की ध्वनियाँ सारे वायुमण्डल को संगीतमय बना देती हैं। इसीलिए वेद में उषः को '**अश्वसूनृते**' कहकर इन विशेषणों से इस काल की भिन्न-भिन्न प्राकृतिक सुन्दरताओं का वर्णन किया।

मन्त्र में दूसरी बात है मनुष्य का निद्रा-तन्द्र त्यागकर अपनी दिनचर्या इसी उत्तम समय से प्रारम्भ करनी चाहिए। इसलिए महर्षि मनु ने विधान किया-'**ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत, धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्**'-'ब्राह्म मुहूर्त में जागे और प्रथम आध्यात्मिक उन्नति के लिए विचारे और फिर सांसारिक कारोबार के विषय में सोचे।' इस समय के शान्त वातावरण और स्वस्थचित्त से मनुष्य जितना अच्छा सोच सकता है, उतना दूसरे समय में नहीं।

मंत्र की तीसरी बात घरेलू तौर पर सामाजिक जीवन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि देवियाँ अपने जीवन में उषः के गुणों को धारण करके सारे वायुमण्डल को सुरभित, शान्त और मधुमय बना दें। देवियों में उषः का पहला गुण '**सत्य श्रवसि**' होना चाहिए। भाष्यकारों ने सत्य श्रवसि का एक अर्थ 'आनन्द से युक्त गृहस्थाश्रम' भी किया है। कौन-सा गृहस्थ आनन्दधाम होगा? जहाँ देवियाँ ऋत, हित और मित गुण से युक्त वाणी का प्रयोग करें। वाणी से सत्य कभी ओझल न हों भर्तृहरि ने गृहस्थाश्रम की विशेषता का वर्णन करते हुए लिखा है कि-

'**सानन्दं सदनं सुतास्तु सुधियः, कान्ता प्रिया लापिनी**'

सदन को सानन्द बनाने में '**कान्ता प्रियालापिनी**'-मधुरभाषिणी पत्नी का बहुत बड़ा महत्व है, किन्तु वह मधुरभाषण ऋत और सत्य से युक्त होना चाहिए। बातें मीठी-मीठी भी यदि किसी को बहकानेवाली हों तो किस काम की?

अतः हितभाषण के साथ मितभाषण का भी उतना ही महत्त्व है।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

thearyasamaj.org

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-७८

जघर्षुः पाषाणे चिकुरमिह मुक्त्यै कतिपये
जुहुस्तोयं भूयः किमपि नदतोये जड़धियः।
परैर्भाग्यं दृष्टं नभसि विविधे तारकचये
विचारैः स्वैस्तीव्रैर्हरसि जड़तां वेदयसि च।।

इस देश में कुछ लोग
अपनी मुक्ति के लिए
पत्थरों पर सिर रगड़ते थे?
कुछ मूर्ख ऐसे भी थे जो
नदियों के जल में बार-बार
जल चढ़ाते थे !!
कुछ अनन्त आकाश में घूमते
तारों और नक्षत्रों में
अपना भाग्य निहारा करते थे।
तुमने अपने तीव्र विचारों से
सारी जड़तायें दूर कीं और
देशवासियों को ज्ञान दिया।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

आर्य समाज इन्दिरानगर लखनऊ के मंत्री

श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी

का वार्षिक अधिवेशन में प्रतिवेदन

आर्य समाज इन्दिरा नगर, लखनऊ की उन प्रतिष्ठित आर्य समाजों में से एक है जिनके अपने भवन हैं जहाँ दैनिक यज्ञ नियमित रूप से गत कई वर्षों से सम्पन्न हो रहे हैं जहाँ गुटबाजी नहीं है तथा प्रत्येक वर्ष के निर्वाचन अत्यन्त शालीनता से सम्पन्न होते हैं तथा निर्वाचित पदाधिकारी एवं सदस्य गण समाज की सर्वांगीण प्रगति में तन मन धन से योगदान करते हैं।

वर्ष २०१३ में समाज के प्रथम तल के हाल के निर्माण के कारण समाज पर दो लाख से अधिक ऋण हो गया था जिसमें लगभग एक लाख रुपया समाज से प्राप्त होने वाले दान के माध्यम से भुगतान किया जा चुका है। यह उक्त निर्माण की उपयोगिता को प्रमाणित करता है। समाज द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम इन्दिरा नगर के विभिन्न सेक्टरों तथा एच.ए.एल. कालोनी में मनाये गये। बाल/किशोर/युवाओं हेतु कार्यक्रम वर्ष २०१४ में उतना प्रभावी नहीं रहा जितना वर्ष २०१३ में हुआ था। वेद प्रचार सप्ताह एवं अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से जन सामान्य में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया गया। वार्षिकोत्सव हेतु घर-घर जाकर प्रचार करने से पर्याप्त संख्या में नये लोगों ने सहभागिता की तथा धर्म लाभ प्राप्त किया। इस बार वार्षिकोत्सव में नये विद्वान उपदेशक तथा भजनोपदेशक आये थे जिनके प्रवचनों को सदस्यों ने खूब सराहा तथा आम जनात भी अत्यंत प्रभावित हुई। वार्षिकोत्सव की भोजन व्यवस्था में मुख्य भूमिका श्री गंगाराम आर्य जी ने निभाई। यज्ञ के ब्रह्मा प्रत्येक वर्ष की भाति श्री सत्यदेव वानप्रस्थी रहे। प्रधान जी ने वैदिक प्रश्नोत्तरी छपवाकर वितरित करायी जिससे साधारण जनता को पर्याप्त लाभ हुआ। वार्षिकोत्सव में महिला सम्मेलन तथा युवा सम्मेलन भी अच्छी प्रकार सम्पन्न हुआ तथा बढ़ चढ़कर भागीदारी हुई।

जम्मू कश्मीर में बाढ़ की विभीषिका में समाज के सदस्यों ने रु.१५,२०५/- का तथा पं.सत्यपाल पथिक आर्य भजनोपदेशक की चिकित्सा हेतु रु.५,०००/- का योगदान किया जिसमें वयोवृद्ध सदस्य श्री लक्ष्मण प्रसाद का प्रयास सराहनीय रहा। समाज के सदस्यों, श्री रामगोविन्द ठाकुर, श्री इन्द्रदेव गुप्त, श्री जे.पी.आर्य, इं.श्री वेद प्रकाश के प्रयास उपदेश व्यवस्था में सराहनीय रहे। नियमित उपदेशकों में डॉ.वेद प्रकाश आर्य, आचार्य विश्वव्रत, श्रीमती निष्ठा देदालंकार, श्री मनोज मिश्र तथा श्री अखिलेश शास्त्री के उपदेशों से साप्ताहिक सत्संगों की गुणवत्ता बढ़ी। उत्तराखण्ड से स्वयं समागत विद्वान् श्री जयदत्त उपरेती के भी प्रभावी प्रवचन हुए। समाज के कई सदस्य श्री आर.जी.ठाकुर, श्री नवनीत निगम, श्री डोरीलाल आर्य, श्रीमती कान्ति कुमार, श्री लक्ष्मण प्रसाद, श्री अभयपाल सिंह आदि उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने अनेक संस्कार परिवारोंमें कराए तथा उपदेश प्रवचन भी दिये जिससे जनता लाभान्वित हुई तथा समाज को दान भी प्राप्त हुआ। समाज में होने वाले विवाहों को सम्पन्न कराने में पुरोहित के रूप में मुख्य योगदान श्री रामगोविन्द ठाकुर का रहा। कोषाध्यक्ष श्री अभयपाल सिंह हृदयरोग से पीड़ित होने के बावजूद उनके अनन्य सहयोगी रहे। श्री अभयपाल सिंह ने समाज के दैनिक सत्संगों में भी अत्यधिक योगदान किया। साप्ताहिक सत्संगों की तैयारी में उपमंत्री श्री एस.के.निगम का प्रशंसनीय योगदान रहा। गत कुछ दिनों से उनकी दैनिक सत्संगों में भागीदारी तथा प्रथम तल के हाल के दीवारों पर वेद मंत्रों के अंकन हेतु किया गया प्रयास अति प्रशंसनीय है। दान एकत्र करने में प्रत्येक वर्ष की भाँति श्रीमती कुसुम वर्मा, श्रीमती कांति कुमार तथा प्रधान जी, श्री डोरीलाल आर्य, श्री सदानन्द राय, श्रीमती आनन्द कुमारी का विशेष योगदान रहा। श्रीमती कांति कुमार ने डा.श्रीमती रमाकांति को समाज में निःशुल्क चिकित्सा हेतु भी प्रेरित किया है तथा आशा है कि शीघ्र ही यह सेवा भी आर्यसमाज मन्दिर में प्रारम्भ हो सकेगी। ऋषि बोधोत्सव पर निकलने वाली जनपद स्तरीय शोभायात्रा में भी प्रत्येक वर्ष की भांति समाज के सदस्यों ने ट्रक पर भजन गाते हुए तथा पत्रक वितरित करते हुए प्रचार किया।

आर्यो! महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करन बताया है। इसमें से हम किसमें कितना योगदान कर रहे हैं यह विषय चिन्तन करके क्रियान्वयन कराने का है। शारीरिक उन्नति हेतु समाज में प्रतिदिन व्यायाम, आसन तथा प्राणायाम की कक्षा चलनी चाहिए। आत्मिक उन्नति के लिए अन्तरंग योग-धारणा, ध्यान, समाधि का प्रशिक्षण एवं क्रियात्मक योगाभ्यास प्रतिदिन होना चाहिए। सामाजिक उन्नति हेतु वर्तमान में चलाये जा रहे कार्यक्रम के अतिरिक्त समाज के पुस्तकालय को और सुदृढ़ करने, व्यवस्था और ठीक करके दोपहर में वाचनालय का कार्य मन्दिर में होना चाहिए। विभिन्न मलिन बस्तियों में सामूहिक यज्ञ, निःशुल्क चिकित्सा का संचालन, निर्धन कन्याओं का सामूहिक विवाह, निर्धन बच्चों की शिक्षा, निर्धन प्रौढ़ कन्नियों, घरेलू कामकाजी *(शेष पृ. 5 पर...)*

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

ऋषि दयानन्द.....

दिया कि, साहस कैसी वस्तु होती है। विचारों के अनुकूल चलना सरल कार्य नहीं है। दुनिया में ऐसी आत्माओं की कमी नहीं है, जो विचार तो कुछ रखती हैं, पर आचरण दूसरे प्रकार का करती हैं। ऋषि ऐसी आत्माओं से परे था- अत्यन्त उच्च था। उसके विचार सदा कार्य रूप में ही प्रदर्शित होते थे। अपने निर्भीक विचार प्रकट करने तथा उनके अनुकूल आचरण करने में उसकी वेगवती कर्मधारा कभी कुण्ठित गति को प्राप्त नहीं हुई। उन दिनों भारत अज्ञानान्धकार में सुप्त हो रहा था, बड़े-बड़े धर्म-धुरीण विद्वान् और कर्मठ पण्डित पुरानी लीक पीटने में ही अपना गौरव समझते थे। ऋषि जानता था और भली-भाँति जानता था कि मेरे विचार सुनकर भारतीय समाज में तहलका मच जाएगा, सारा भारत मेरा विरोध करेगा, अनेक अज्ञानी जीव मेरे शत्रु बन जाएँगे, कोई मेरी वाणी सुनने को तैयार न होगा, पर इन बातों से वह हत साहस नहीं हुआ। वह खूब बोला- सिंह के समान गरजा! देश के विरुद्ध रहने पर भी अपना स्वर ऊँचा चढ़ाना साधारण साहस का कार्य नहीं है। क्या ऐसा अपूर्व साहस सम्मान की वस्तु नहीं है?

अन्त में वही हुआ, जो बहुधा ऐसे महात्माओं के साथ हुआ करता है। प्रायः सारा भारत उसे शत्रु के रूप में देखने लगा। मुसलमान उससे असन्तुष्ट हुए, ईसाई और जैनी उससे बिगड़े और सनातन धर्मी तो उसके पीछे सत्तू बाँध कर ही पड़ गए। उसे अपमानित और त्रस्त करने में कितने प्रयत्न नहीं किये गए- पर ऋषि के पवित्र जीवन पर इन कुचेष्टाओं को रत्ती भर भी प्रभाव न पड़ा। उसके हृदय में निमिष मात्र के लिये भी म्लान भाव उत्पन्न न हुआ। उसके हृदय में विश्व-प्रेम की विमल धारा प्रवाहित हो रही थी। क्या शत्रु, क्या मित्र, सभी उसकी दृष्टि में एक समान थे। उसके पवित्र प्रेम की वर्षा सभी पर एक समान होती थी। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' उसकी प्रधान नीति थी। क्या आर्य, क्या मुसलमान, क्या जैनी, क्या ईसाई और क्या सनातनी सभी के लिये उसके विशाल एवं पवित्र हृदय में एक समान प्रेम की भावना विद्यमान थी। उसके इस अपूर्व विश्वप्रेम से, वे अछूत भी, जिन्हें आज भी अधिकांश भारतीय पशु से भी हीन समझते हैं, वंचित न रह सके। उसने उनके लिए मनुष्यत्व और धर्म का द्वार उन्मुक्त कर दिया। उसने धर्म के पाखण्डी ठेकेदारों को प्रेम का पाठ पढ़ाया और उन्हें बतलाया मनुष्य मनुष्य सब एक समान हैं, मनुष्यत्व के नाते मनुष्य को चाहिए कि वह प्रत्येक मनुष्य पर प्यार करना सीखे! आज अछूत किस वस्तु को प्राप्त कर मुर्दे से जीवित हो रहे हैं? यह वस्तु ऋषि का वही विश्व प्रेम रूपी अमृत है- और कुछ नहीं। क्या विश्व प्रेम की अपूर्व साधना भी सम्मान पाने योग्य नहीं है?

यद्यपि ऋषि ने महात्माओं के योग्य कोई कौतूहल-जनक चमत्कार भले ही न दिखलाया हो, पर इसमें सन्देह नहीं कि वह भविष्यदर्शी अवश्य था। उसकी सूक्ष्म दृष्टि ने निश्चय ही यह देख लिया था कि भारत का भविष्य क्या है और उसे किस वस्तु की विशेष आवश्यकता पड़ेगी। इसीलिये उसने इस देश को जागृति का सन्देश सुनाया था। भले ही उस समय देश पर उसके सन्देश का विशेष प्रभाव न पड़ा हो, और ऐसा होना अस्वाभाविक नहीं है, पर आज उसके सन्देश का मूर्तिमान स्वरूप दिखाई दे रहा है। स्वराज्य का स्वर ऊँचा हो रहा है, समाज का संस्कार किया जा रहा है, धर्म की बुराइयाँ दूर की जा रही हैं। क्या देश की चिन्ता करना- उसे उन्नति का मार्ग दिखलाना प्रशंसा योग्य अथच आदरणीय कार्य नहीं है?

अस्तु, महात्माओं की विरुदावली गाना सरल कार्य नहीं है, उसके लिये विशेष समय और योग्यता की आवश्यकता होती है। ऋषि के चरित्र की खूबियों का विश्लेषण करना तो विद्वानों और भक्तों का ही कार्य है, सो हम यहाँ दोनों श्रेणियों से बाहर हैं। पर ऊपर लिखे कुछ गुण ऐसे हैं, जिनका मुझ पर विशेष प्रभाव पड़ता है, और यही कारण है, कि मैं ईश्वर की उस उज्ज्वल विभूति को आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखता हूँ।

(२७ नवम्बर, १९२७ ई. 'आर्यमित्र' के ऋषयंक में प्रकाशित। 'वैदिक पथ' से साभार)

वाचनालय से

'आई एस' की यौन दासता की वजह से आत्महत्या कर रही हैं लड़कियाँ' शीर्षक समाचार देते हुए दैनिक **'जनसत्ता'** लिखता है कि जिहादी समूह इस्लामिक स्टेट ने इराक के याजिदी अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं और बच्चों का अपहरण करने के बाद उन्हें युद्ध में लूटे गये सामान के तौर पर बांट दिया और यौन दासता के लिये मजबूर कर दिया, जिसकी वजह से उनमें से कुछ ने आत्महत्या कर ली है।

आई एस आतंकियों ने जून के बाद से इराक के कई हिस्सों में कब्जा कर रखा है और पड़ोसी देश सीरिया के कुछ इलाकों को मिलाकर इस्लामी खिलाफल की घोषणा कर दी है। समूह ने उत्तरी इराक में याजिदी और दूसरे अल्संख्यक समुदायों को निशाना बनाया है।

मानवाधिकार समूह एमनेस्टी इंटरनेशनल के अनुसार आई एस ने इन अल्पसंख्यक समूहों को निशाना बनाकर देश में जातीय नरसंहार, नागरिकों की हत्या को अंजाम दिया और अन्य को दास बनाकर उनकी जिन्दगी मौत से भी बदतर कर दी।

'घर वापसी धर्मान्तरण नहीं' शीर्षक समाचार देते हुए **'दैनिक जागरण'** लिखता है कि पूर्व केन्द्रीय मंत्री व भाजपा नेता डॉ.सुब्रमण्यम स्वामी ने कहा है कि घर वापसी अभियान को धर्मान्तरण नहीं कहा जा सकता। इसमें अपने ही भटके हुए लोग अपने धर्म (घर) में लौट रहे हैं।...काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शनिवार को डॉ.स्वामी ने कहा कि देश में रहने वाले हर व्यक्ति का डी एन ए एक ही है। उन्होंने कहा कि 'हिन्दू' शब्द अरबी शासकों ने दिया है, जबकि चीन के लोग हमें दो हजार से अधिक वर्षों से 'हिन्दू' कहते आ रहे हैं।...उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति को समझने के लिये संस्कृत अनिवार्य होनी चाहिए। उन्होंने करुणानिधि पर तंज कसते हुए कहा कि रावण का जन्म अब के उत्तर प्रदेश के नोएडा में बसरक गाँव में ब्राह्मण कुल में हुआ था। तपस्या के बाद उसने श्रीलंका को जीता और राजधानी बनाई। उसकी पत्नी मंदोदरी भी मेरठ की थी।

एक अन्य समाचार देते हुए **'दैनिक जागरण'** ने बताया है कि 'घर वापसी करने वालों ने मुस्लिम नेताओं को बैरंग लौटाया' है। आगरा के मलपुरा कस्बे में घर वापसी कर हिन्दू बने पांच परिवारों को मनाने पहुँचे मुस्लिम एक्श्यान कमेटी के पदाधिकारियों को बैरंग लौटना पड़ा। पदाधिकारियों ने घर वापसी करने वालों को कई सुविधाएँ देने का वादा किया, पर इसका कोई असर नहीं हुआ। बीस साल से रह रहे पांच परिवार इस्लाम के साथ-साथ हिन्दू धर्म में आस्था रखते थे। क्षेत्र के एक युवक लव पण्डित ने लगातार प्रयास किये और घर वापसी कार्यक्रम के तहत हवन-पूजन कर पांचों परिवारों के २२ लोगों ने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया। घर वापस हुए सदस्यों ने मुस्लिम पदाधिकारियों से साफ कह दिया कि हमारे पूर्वज हिन्दू थे। अब हम वापस हिन्दू धर्म में आ चुके हैं और इसी में रहना चाहते हैं।

'वेद ज्ञान से मानवोन्नति किस प्रकार सम्भव है?' इस प्रश्न का उत्तर देते हुए ब्र.शिवदेव आर्य **'टंकारा समाचार'** (नई दिल्ली) में प्रकाशित अपने लेख में कहते हैं कि परमपिता परमेश्वर को अच्छी प्रकार से जानने के लिए वेद को जानना और मानना नितान्त अनिवार्य है। मानव समाज के लिये वेद की भूमिका में सबसे महत्त्वपूर्ण बात है, आस्तिक बनना। जब व्यक्ति आस्तिक हो जायेगा, तो समाज अत्यधिक उन्नति करेगा। आस्तिकता के आते ही मनुष्य अनुशासित हो जाता है। अनुशासन के अन्तर्गत ही मनुष्य नियम पूर्वक कार्य करने लगता है। आस्तिक होने का सीधा-साफ अर्थ है- परमेश्वर को सर्वव्यापक मानना। इसी से मनुष्य जब भी कोई कार्य करता है, तब यही महसूस करता है कि उसे परमेश्वर देख रहा है। परन्तु वर्तमान समय में अनुशासन नहीं है, इसका कारण है कि हम आस्तिक नहीं हैं, वेद को नहीं मानते- नास्तिको वेद निन्दकः!

इसी अनुशासन के अभाव में दुराचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। इन सब समस्याओं से छुटकारा पाने के लिये हमें वेद की शरण में जाना पड़ेगा। वेदों की महत्त्वपूर्ण भूमिका मनुष्य की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में है।

'परोपकारी' पाक्षिक (अजमेर) में प्रकाशित सम्पादकीय के माध्यम से धर्मवीर ने 'भस्मासुर बनते सन्तों' की चर्चा की है। वह लिखते हैं कि जहाँ धर्म है वहाँ शान्ति और सुख अनिवार्य है, परन्तु आज के वातावरण में धर्म अशान्ति और परस्पर संघर्ष का पर्याय होता जा रहा है।...आज सन्त वह है, जो अशान्त हुआ घूम रहा है। ठग संन्यासी हो गया। विलासी विरक्त कहला रहा है।..यह समस्या सरकार और समाज की बनाई हुई है।...कभी यह समस्या भिण्डरावाला के रूप में, कभी आसाराम बापू के रूप में, कभी राम रहीम के रूप में, कभी रामपाल दास के रूप में।...इन सन्तों और चन्दन तस्कर वीरप्पन में भौतिक अन्तर इतना है कि एक डाकू बन कर डकैती करता है, दूसरा सन्त बनकर डकैती करता है। एक बदनाम है, दूसरे की चरण वन्दना होती है। परिणाम दोनों का एक जैसा होता है।

thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

आर्य्य लोक वार्ता का प्रथम सम्पादकीय

जुलाई १९९८ में प्रकाशित हुआ था और ८०वां 'इतिहास की प्रवृत्ति से छेड़छाड़' फरवरी २००८ में हमें पढ़कर अतीव प्रसन्नता हुई थी। इन १० वर्षों में प्रकाशित सभी सम्पादकीय लेखों को सम्मिलित करते हुए आर्य लोक वार्ता प्रकाशन द्वारा एक अनुपम ग्रंथ 'अमृत पुत्रों! सुनो' का प्रथम संस्करण २००८ में प्रकाशित हुआ था जिसका विमोचन उस वर्ष के आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह में हुआ था। उस समारोह को सभी वेद प्रेमी व साहित्यकार सदैव याद रखेंगे।

प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने मुझे लगभग ३० प्रतियां 'अमृत पुत्रों! सुनो' की उपलब्ध कराई थीं। समय समय पर मेरे परिवार के सदस्य व सम्बन्धी उक्त ग्रन्थ को पढ़ते रहते हैं व पात्र पाठकों, वेदप्रेमियों को गत ६-७ वर्षों में हम देते रहे हैं। मुझे यह लिखते हुए अत्यधिक हर्ष हो रहा है कि जुलाई-अगस्त २०१४ के अमरीका भ्रमण के मध्य में वहाँ के वेद प्रेमियों ने 'अमृत पुत्रो! सुनो' ग्रन्थ की पांच प्रतियाँ मुझसे प्राप्त कीं और समुचित धनराशि मुझे दी। साथ ही साथ आर्य लोक वार्ता के कुछ पुराने अंकों को भी मैंने उन्हें उनके अनुरोध पर दिये।

आज मैं अपने हृदयोद्गार लिख रहा हूँ क्यों कि मैं आर्य लोक वार्ता के दिसम्बर २०१४ अंक में प्रकाशित सम्पादकीय लेख को पढ़कर इतन हर्षित हो गया कि पुनः 'अमृत पुत्रो! सुनो' ग्रन्थ लगभग दो घंटे पढ़ा- पीछे से पढ़ना प्रारम्भ किया और मुख्य मुख्य सम्पादकीय इस आराम से पढ़े कि उनकी चर्चा मैं अवश्य करूं।

सम्पादकीय लेख तो सभी ज्ञानवर्द्धक व प्रेरणा देने वाले हैं किन्तु दिसम्बर १४ का 'कहीं से हम आये नहीं' पढ़कर ऐसा लगा कि मेरी व मेरे जैसे अन्य पाठकों की जिज्ञासा का समाधान मिल गया। उक्त सम्पादकीय में डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी ने अपना सारा कौशल व सामर्थ्य प्रस्तुत कर दिया है। मैं समझता हूँ कि उक्त सम्पादकीय सर्वोत्तम है। सृष्टि की उत्पत्ति, यजुर्वेद व अन्य वेदों की उत्पत्ति व अन्य विषयों पर तो किसी न किसी प्रकार समाधान मिलता रहा है परन्तु आर्य अनार्य, आर्य द्रविड़ व आर्य बाहर की दुनिया के अन्य देशों से चलकर भारत में आए या अन्य विदेशी इतिहासकारों, मैकाले के मानने वालों ने क्या कहानी गढ़ी व भ्रमित किया है इस पर कोई ठोस समाधान नहीं मिला था।

मैं प्रधान सम्पादक जी का हृदय से आभारी हूँ। 'अमृत पुत्रो! सुनो' के अंतिम ६ पृष्ठों 'शुभाकांक्षा संचयन' में सभी सुविज्ञ पाठकों, वैदिक विद्वानों, साहित्यकारों की शुभाकांक्षाएं प्रकाशित हुई हैं जिनमें श्री वसन्त सिंह 'भृंग', कु.अक्षता कोचीन, बैजनाथ प्रसाद शुक्ल 'भव्य', भद्रपाल सिंह आर्य, वेद प्रकाश गर्ग, श्रीमती निर्मला बंसल, अभिषेक, श्रीमती प्रमोद कुमारी, बांकेविहारी 'हर्ष', के.जी.बाल कृष्ण पिल्ले तिरुअनन्तपुरम, दलवीर सिंह राघव, आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र जी मुख्य हैं।

-पाल प्रवीण

एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

जनवरी २०१५ अंक को पढ़कर मुझे हार्दिक खुशी का अनुभव हुआ। महात्मा आर्यभिक्षु जी का चित्र प्रकाशित देखकर पुरानी स्मृतियाँ साकार हो उठीं, जिन दिनों मैं पुष्पनगर आजमगढ़ में प्रधानाचार्य था, आर्यभिक्षु जी महाराज का वहाँ बराबर पदार्पण हुआ करता था। इसके साथ ही डॉ.कन्हैया सिंह जी के सम्मान का समाचार पढ़कर भी गर्व की अनुभूति हुई। उनकी सेवाओं और साहित्यिक सरोकारों की जितनी सराहना की जाय कम है। डॉ.वेद प्रकाश आर्य का सम्पादकीय तो अत्यधिक मूल्यवान और दिशादर्शक है। अपने कार्यकाल में हमने पुष्पनगर कालेज में उन्हें आमंत्रित कर सम्मानित किया था। इसके अलावा श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी का चित्र और उनका लेख तथा उनकी ओजस्वी वाणी तो कभी भुलाई ही नहीं जा सकती है।

श्रीमती कान्ति कुमार जी के माध्यम से मुझे 'आर्य लोक वार्ता' प्राप्त होता है। किन्तु मुझे प्रसन्नता होगी अगर इसे मेरे अपने पते पर भेजने की कृपा करेंगे। शुभकामनाओं सहित!

-राजकुमार गुप्त

पूर्व प्रधानाचार्य, पुष्पनगर, आजमगढ़

***

'आर्य लोक वार्ता' का जनवरी २०१५

अंक प्राप्त हुआ। इस बार 'काव्यायन' के अन्तर्गत डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक' की रचना '१३२ बच्चे शहीद' अच्छी लगी। डॉ. कैलाश निगम व रम्मन लखनवी के मनहरण कवित्त भी रोचक हैं। डॉ.मिर्जा हसन नासिर की गजल में देश की अनेक समस्याओं को उकेरा गया है। मुखपृष्ठ पर अमृत खरे द्वारा सामवेद से काव्यानुवाद 'तू अपनी प्यास बुझा ले' भी अच्छा है। स्व.प्रकाशवीर शास्त्री के चित्र के साथ प्रस्तुत मुख्य शीर्षक 'देश में पाकिस्तान बनाने की मनोवृत्ति अभी भी विद्यमान है' पठनीय व समझने योग्य है।

सम्पादकीय 'नरेन्द्र मोदी का मोहन मंत्र' बड़ी खोजबीन के साथ बड़े-बड़े दिग्गज विद्वानों के उदाहरणों से संयुक्त है, जिसमें गुप्त जी की 'भारत भारती' के साथ 'प्रसाद' जी की पंक्तियां 'यही भरत वह बालक है जिसके नाम से, भारत संज्ञा पड़ी इस वर भूमि की।' और तुलसी, सूर व भूषण के उदाहरणों को पढ़कर अन्तर में आनन्द का अम्बुधि हिलोरें भरने लगा। समाचार समाज में घटित घटनाओं से अवगत कराते हैं। कुल मिलाकर यह अंक अतीव उपयोगी व ज्ञान प्रदायक है। सम्पादक का बहुत बहुत बधाई।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'

३७०/२७, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता जनवरी अंक के

प्रथम पृष्ठ पर 'देश में पाकिस्तान बनाने की मनोवृत्ति अभी तक विद्यमान है'- इस चिन्तनीय विषय पर प्रकाश डाला गया है। 'वेदांजलि' में पं.शिवकुमार शास्त्री जी का मंत्र-व्याख्या सत्कर्मों की ओर प्रेरणा देता है। हमें अपना जीवन यज्ञमय बनाना चाहिए इसके लिए सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिये और ध्यान रहे मुझसे कोई कार्य अयज्ञीय न हो जाये, इसके लिए सावधान रहना चाहिए। आनन्द कुमार जी का धारावाहिक 'मनुष्य का विराट रूप' बहुत ही शिक्षाप्रद है। 'अनन्त की खोज' महात्मा आनन्द गिरि का बढ़ा ही मनोवैज्ञानिक लेख है।

८८ वर्षीया वेद विदुषी डॉ.शान्तिदेव बाला जी ने ईशावास्योपनिषद् का व्याख्या ग्रंथ पूरा कर लिया ये उनके अदम्य साहस मनोबल का परिचायक है। बड़े गर्व की बात है और हम सबको उनके साहस और मनोबल की सराहना करते हुए प्रेरणा लेनी चाहिए और उन्हें उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद। 'काव्यायन' में सभी कवितायें महत्वपूर्ण हैं फिर भी डॉ.रूपचन्द्र दीपक की '१३२ बच्चे शहीद' अत्यंत हृदय विदारक एवं मार्मिक है। इसके अलावा गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' की 'सम्भावनाओं का पुजारी' विशेष महत्वपूर्ण है।

-प्रमोद कुमारी

एम.एस.३७, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का जनवरी, २०१५

अंक विलम्ब से प्राप्त हुआ। प्रथम पृष्ठ पर स्व.प्रकाशवीर शास्त्री जी का लेख सारगर्भित एवं प्रभावी है। इससे अनेक तथ्यों की जानकारी हुई। आपका सम्पादकीय 'नरेन्द्र मोदी का मोहन मंत्र' रोचक, खोजपूर्ण, एवं अनूठा है। 'दयानन्द चरितम्' से उद्धृत अंश असरदार एवं प्रेरक हैं। धारावाहिक 'मनुष्य का विराट रूप' तथा व्याख्यानमाला 'अनन्त की खोज' पूर्ववत् ज्ञानवर्द्धक, विचारोत्तेजक एवं प्रेरणादायक है। 'काव्यायन' के अन्तर्गत रचनाएँ उत्तम एवं गुनगुनाने योग्य हैं। पढ़कर आह्लादित एवं आनन्दित हुआ। कई महत्त्वपूर्ण समाचारों की भी जानकारी हुई।

'आर्य लोक वार्ता' मिला, खिले हृदय के फूल।
रचनाएँ इसकी सभी, हैं मनहर अनुकूल।।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

क्रियाशीलता का दूसरा नाम जीवन है। कर्म में प्रवृत्ति किसी ओर भी हो चाहे वह प्रेय मार्ग की ओर या श्रेय मार्ग की ओर सदैव सफलीभूत होती है। मेरे प्रिय भ्राता सतीश निझावन जी श्रेय मार्ग की ओर बढ़ते हुए अपनी सहधर्मिणी श्रीमती ऊर्मिला देवी जी जो मेरी प्रिय बहन थीं, की स्मृति को संजोने हेतु 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' प्रेषित कर हम सबको व सभी पाठकों को ज्ञान, भक्ति व आत्मउत्थान की ओर प्रेरित करने का उत्तम कार्य किया है। ऊर्मिला मणिदीप के प्रारम्भ में विनय में वेदमंत्र का काव्यानुवाद श्री अमृत खरे द्वारा लिखा गया तो मन को तरंगित करने वाला है। अतिशोभनीय प्रारम्भ है। 'दो बोल' डॉ. वेद प्रकाश जी आर्य द्वारा प्रसंगसहित काव्य रचनाओं का उल्लेख व अंतिम छन्द की पंक्तियां उनकी विद्वत्ता का दिग्दर्शन कराती हैं। पुस्तक का प्रत्येक भाग अपना महत्व मानव जीवन में दर्शाता है। मैं समझती हूँ जिस प्रकार मणियों को एक माला में पिरोने में सूत्र की भूमिका होती है, वैसे ही 'दो बोल' ऊर्मिला मणिदीप के आधार सतीश निझावन लेख पिरोने में, सशक्त सिद्ध हुआ है। गागर में सागर भरने का प्रयास प्रशंसनीय है। सतीश भजन तरंग में हर गीत की हर पंक्ति हृदय को झकझोरती है। वैदिक सिद्धान्त और अध्यात्मिक विचार जो पुस्तक के हर भाग में उपलब्ध है, जन जन के लिए अत्यंत लाभकारी व प्रेरणादायक है। अनुभववृद्ध आर्य जनों के आशीर्वाद से सतीश जी आप 'अहर्निश सेवा महे' की सूक्ति को चरितार्थ किये हुए हैं। आपको साधुवाद देती हूँ। कामना करती हूँ दीर्घ आयु प्राप्त कर अपने हर सत्प्रयास में शानदार सफलता भविष्य में भी प्राप्त करें।

-चन्द्रकान्ता आर्या 'क्रान्ति', द्वारा-श्री धर्मवीर आर्य

२६७, सेक्टर-१४, सोनीपत, हरियाणा

***

अक्षर लोक

'ऋषि दयानन्द का तत्व दर्शन' ग्रन्थ पं.गंगा प्रसाद उपाध्याय द्वारा

अंग्रेजी में रचित ग्रन्थ 'फिलॉसफी ऑफ दयानन्द' का हिन्दी अनुवाद है। अनुवादक हैं आर्य जगत के जाने माने विद्वान् डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक'। मूल अंग्रेजी ग्रन्थ वर्ष १८५५ में 'गंगा ज्ञान मंदिर' इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था। यशःशेष पं.गंगा प्रसाद उपाध्याय ने हिन्दी, उर्दू, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा में लगभग ७५ छोटी बड़ी पुस्तकों की रचना की है। 'फिलॉसफी ऑफ दयानन्द' उनमें से एक है।

'फिलॉसफी ऑफ दयानन्द' की भूमिका में पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय लिखते हैं कि यह पुस्तक ऋषि दयानन्द के तत्व-दर्शन को आधुनिक विचारकों के सम्मुख लाने की तीव्र ललक का फल है। ऋषि दयानन्द ने किसी नवीन दर्शन का प्रतिपादन नहीं कियां उन्होंने स्पष्ट कहा है कि उन्होंने प्राचीन ऋषियों के मार्ग का ही अनुसरण किया है। तथापि उनके ग्रन्थों को विहंगम दृष्टि से देखने मात्र से स्पष्ट हो जाता है कि वेदों के दार्शनिक सिद्धान्तों की उनकी व्याख्या स्वकीय है। उन्होंने प्राचीन सिद्धान्तों को नवीन शैलियाँ ही नहीं प्रदान कीं अपितु ऐसे प्रखर तर्क भी प्रस्तुत किये हैं कि वैदिक सिद्धान्त आधुनिक एवं वैज्ञानिक कसौटियों पर भी खरे उतरते हैं। निस्सन्देह ऋषि दयानन्द की विचार धारा के अध्ययन से वर्तमान एवं भविष्य, दोनों युग लाभान्वित होते रहेंगे।

वह पुनः लिखते हैं कि ऋषि दयानन्द के किसी नवीन दर्शन का प्रतिपादन न करने से 'दर्शन-शास्त्र' के क्षेत्र में उनका योगदान कम नहीं हो जाता। उनका प्राचीन काल से सन्दर्भ लेना और उसका सम्मानपूर्वक उल्लेख करना सराहनीय है। उन्होंने वर्तमान को प्राचीन काल से जोड़कर और भविष्य के लिये द्वारा खोलकर मानवी चिन्तन-धारा में नैरन्तर्य कायम रखा है। ऋषि दयानन्द की विशेषता यह है कि वे प्रतिपक्षी के मत का खण्डन अदम्य साहस से करके भी स्वम् अन्तिम निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं करते अपितु प्रतिपक्षी को मत-भिन्नता का समुचित अधिकार देते हैं। वे भूतकाल को सम्मान देकर भी भविष्य के प्रति संशयवादी नहीं बनते। प्रकृति के नियम विषयक उनकी अवधारणा चक्रगामी है। संसार-चक्र का 'चक्र' शब्द भी इसी प्राचीन नियम की ओर इंगित करता है कि इतिहास स्वयं को दुहराता है। यह नियम केवल मानव नहीं अपितु ब्रह्माण्ड के इतिहास पर भी लागू होता है। कर्म में स्वतंत्र और यथावत् फल का भोक्ता होने से जीव का प्रगतिपथ ऋजुरेखीय न होकर वक्ररेखीय है, जिसमें बारी-बारी से आरोहण-अवरोहण और उत्थान-पतन आते रहते हैं। पं.गंगा प्रसाद उपाध्याय की मान्यता है कि ऋषि दयानन्द न तो आधुनिकों के अहंवाद से सहमत हैं, जिनका प्राचीन काल के प्रति असम्मान है और न ही परम्परावादियों के इस नैराश्य से सहमत हैं कि वर्तमान पतन के बाद पुनरुत्थान सम्भव नहीं; अपितु उनका यह मत है कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता रहा है और आगे भी रहेगा।

ग्रन्थ के विद्वान अनुवादक डॉ.रूपचन्द्र दीपक लिखते हैं कि ऋषि दयानन्द समान रूप से ब्रह्मवित्, वेदवित्, धर्मवित् एवं दर्शनवित् थे। विश्व में उनकी प्रतिष्ठा समाज-सुधारक के रूप में अधिक है; दर्शनवित् के रूप में उससे कम है। भारतीय षड्दर्शन में ऋषि कपिल का सांख्य दर्शन, ऋषि कणाद का वैशेषिक दर्शन, ऋषि गौतम का न्याय दर्शन, ऋषि पतंजलि का योग दर्शन, ऋषि जैमिनी का मीमांसा दर्शन तथा ऋषि व्यास का वेदान्त दर्शन है। इन दर्शनों को पृथक् पृथक् मानकर अथवा सांख्य-योग तथा न्याय-वैशेषिक के जोड़े बनाकर पढ़ाया जाता है। वस्तुतः 'वैदिक दर्शन' के भीतर छहो दर्शनों का समन्वय करके अध्ययन-अध्यापन होना चाहिए। यह समन्वय-कार्य ऋषि दयानन्द ने किया है।

अनूदित ग्रन्थ 'ऋषि दयानन्द का तत्व-दर्शन' नौ अध्यायों में विभाजित है। पहले अध्याय में ऋषि दयानन्द का 'जीवन वृत्त' दिया गया है। दूसरे अध्याय 'ज्ञान का अर्जन' में 'दर्शन' का 'अर्थ' और उसके 'क्षेत्र' का विश्लेषण करने के साथ-साथ स्पष्ट किया गया है कि वास्तव में 'ज्ञान' का 'ज्ञाता' कौन होता है। साथ ही अनेकानेक मतों, विचारों, सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। तीसरे अध्याय में 'ईश्वर के स्वरूप', चौथे अध्याय में 'जीव और जीवन', पांचवें अध्याय में 'प्रकृति अर्थात् पदार्थ' का विवेचन किया गया है। छठे अध्याय में 'आत्मा के अमरत्व' की विशद् व्याख्या की गयी है, सातवें अध्याय में 'आचार-शास्त्र के तत्व' को समझाया गया है। आठवां अध्याय 'हमारे नैतिक गुण' बताता है। नवें एवं अन्तिम अध्याय में 'समाज शास्त्र और राजनीति' के अन्तर्सम्बन्धों को खंगाला गया है।

दर्शन शास्त्र जैसे गूढ़ विषय पर एक सहज-सरल ग्रन्थ की रचना एक उपलब्धि ही है। अनुवाद में मूल ग्रन्थ की भावाभिव्यक्ति, सहजता, स्पष्टता और दयानन्द-निष्ठा को सफलतापूर्वक बनाये रखा गया है। पुस्तक पठनीय, मननीय और संग्रहणीय है। लगभग साढ़े तीन सौ पृष्ठों वाला ओर हार्डबाउण्ड 'ऋषि दयानन्द का तत्व दर्शन' नयनाभिराम और निर्दोष प्रकाशित हुआ है। अनुवादक और प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं।

पुस्तक के प्रकाशक हैं : विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द (४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६)। पुस्तक का मूल्य तीन सौ रुपये है जो ग्रन्थ के आकार और मुद्रण को देखते हुए कम ही है।

thearyasamaj.org

धारावाहिक-(51)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

राजा सुधन्वा ने वैदिक धर्म त्यागकर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। वैदिक धर्म की अवनति देखकर उसकी रानी आँसू बहाती हुई बोली-'किं करोमि, क्व गच्छामि, को वेदानुद्धरिष्यति।' अर्थात्, क्या करूँ! कहाँ जाऊँ! वेदों का उद्धार कौन करेगा!!

संयोग से उस समय कुमारिल भट्ट उसी मार्ग से जा रहे थे जहाँ रानी महल की खिड़की पर बैठी हुई शोक के आँसू बहा रही थी। भट्ट की भुजा पर आर्यांगना के तप्त अश्रुबिन्दु गिरे और कानों में उसका उद्गार दुन्दुभि की भाँति ध्वनित हुआ। मानो किसी ने उनके पुरुषार्थ को चुनौती दे दी। स्वात्माभिमानी आर्यपुरुष ने गर्व से सिर उठाकर कहा-'मा विषीद वरारोहे, भट्टाचार्योऽस्मि भूतले।' -नारी, तू चिन्ता न कर, मैं कुमारिल भट्ट अभी इस पृथ्वी पर मौजूद हूँ।

इसके बाद कुमारिल ने बौद्ध धर्म के उन्मूलन का दृढ़ संकल्प करके छद्मवेश में बौद्धधर्म की दीक्षा ली। उस समय बौद्ध धर्म में अनेक प्रकार की बुराइयाँ आ गई थीं। कुमारिल ने बौद्धों के समस्त रहस्यों को जानकर उनका खण्डन प्रारम्भ किया। छिद्र पर प्रहार करने से विजय मिलती ही है। कुमारिल अपने विध्वंस कार्य में सफल हुए। यथाशक्ति वैदिक धर्म का पुनरुद्धार करने के बाद उन्हें ध्यान आया कि उन्होंने बौद्धों के साथ विश्वासघात करके सिद्धि प्राप्त की है। अनुचित रीति से सत्कार्य की सफलता भी शास्त्र-वर्जित है। अतएव उन्होंने लोकधर्म की मर्यादा की रक्षा के लिए इस पाप का प्रायश्चित्त करने का निश्चय किया। प्रयागमें भूसी के ढेर में आग लगाकर कुमारिल उसी में अपने शरीर को धीरे-धीरे जलाने के लिए बैठ गए। उनके शरीर-त्याग के पूर्व जगद्गुरु शंकराचार्य वहां आए। उन्होंने कुमारिल से आदरपूर्वक कहा-'आप अपना हठ त्याग दें, क्योंकि आपका प्रयोजन सिद्ध हो चुका है-शास्त्रानुसार गुप्त रूप से किए गए पाप को सर्वसाधारण के समक्ष प्रकट कर देने से उसका प्रभाव नष्ट हो जाता है।'

कुमारिल ने गंभीरता से उत्तर दिया-'मुझे धर्म की मर्यादा पर स्थिर रहना है; यह मेरा निर्णय है- मेरा ही नहीं, सर्व मान्य शास्त्रों का निर्णय है।' उन्होंने हंसते हुए शरीर की आहुति दे दी।

इस प्रसंग में हिन्दी के पीयूषवर्षी कवि सूरदास के जीवन की घटना भी उल्लेखनीय है। सूरदास ने किसी युवती पर कुदृष्टि डालने के अपराध का प्रायश्चित्त स्वयं अपनी आँखों को फोड़कर किया था। पाश्चात्य सभ्यता के अन्ध उपासकों की दृष्टि में इस प्रकार के मनोविकार उपेक्षणीय हो सकते हैं। वे लोग इस प्रकार के कष्टकर कर्म को मूर्खतापूर्ण कह सकते हैं। परन्तु हमें भगवान् कृष्ण के इस कथन को कभी न भूलना चाहिए कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, साधारण लोग उसीका अनुकरण करते हैं; वे जैसा आदर्श उपस्थित करते हैं, लोक उसीको अपना लेता है-

यद्यदाचरति श्रेष्टस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।
-गीता

जाति अपने सनातन आदर्श से ही जीवित रहती है। आज भी स्वदेश की अशिक्षित ग्रामीण जनता में प्राचीन आदर्शों का पालन किसी न किसी रूप में होता है। किसी के हाथ से गाय बैल भैंस आदि की हत्या हो जाती है तो वह चारों ओर अपने को हत्यारा घोषित करता हुए एक निश्चित अवधि तक घर गाँव के बाहर भीख मांगकर जीवन व्यतीत करता है। इसे हत्यारी लगना कहते हैं। ऐसी ही और भी प्रथायें प्राचीन ढंग के समाज में अभी तक चली आ रही हैं। हमें यह स्वीकार करना होगा कि सामाजिक अपराधों को सीमित करने में और सभ्यता के संरक्षण में ये पुलिस और कानून से अधिक उपयोगी हैं।

३-लोक कैसे सुधरेगा?

वास्तव में, लोक का संस्कार और जनता का नैतिक उत्थान तभी होगा जब लोग अपने सांस्कृतिक आदर्शों के अनुसार अपने दोषों को स्वयं स्वीकार करते हुए प्रतिष्ठाजनक कर्मों से उनका संशोधन करेंगे। दंड की अपेक्षा शिक्षा, भय की अपेक्षा विवेक, कानून की अपेक्षा धर्म और पुलिस की अपेक्षा आत्मा को अधिक महत्त्व देना चाहिए। हमारे प्राचीन आदर्श इसी ओर संकेत करते हैं। प्राचीन आदर्श, भीष्म के शब्दों में, यह है-'धर्मेण निधनं श्रेयो न जयः पापकर्मणा'-महाभारत। अर्थात्, दुष्कर्म द्वारा सफलता प्राप्त करने की अपेक्षा सत्कर्म करते हुए मर जाना भी श्रेयस्कर है। प्राचीन आदर्श, भगवान कृष्ण के शब्दों में, यह है कि निन्दित जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा एक बार मर जाना ही सौगुना उत्तम है- 'महागुणो वधो राजन्, न तु निन्दाकुजीविका' -उद्योगपर्व। विबुध व्यास के मत से मनुष्य दो घड़ी भी शुभ कर्म करते हुए ही जीए; परन्तु लोक-परलोक-विरोधी कर्म के साथ कल्प भी जीने की इच्छा न करे-

मुहूर्त्तमपि जीवेद्धि नरः शुक्लेन कर्म्मणा।
न कल्पमपि जीवेच्च लोकद्वयविरोधिना।।
-स्कन्दपुराण

इस प्रकार की भावनाओं से आत्मा बलवान् होती है। और बलवान् आत्मा न तो भौतिक सुख-वैभव की लालसा से पापकर्म में प्रवृत्त होती है और न प्राण-मोह-वश किसी अपराध का उचित दंड भोगने से भयभीत होती है। उसका तो संकल्प यही होता है कि मैं परमात्मा के चरणकमलों में ऋण-रहित होकर जाना चाहती हूँ-'अनृणो गन्तुमिच्छामि तद्विष्णोः परमं पदम्।'-मनुस्मृति। मंगल मार्ग पर चलने के लिए हृदय पर से अपराधों का अनावश्यक भार उतार देना आवश्यक है। मनुष्य का हृदय हलका, निर्विकार होकर ही विश्व-हृदय के साथ मिलकर चल सकता है। आन्तरिक सरलता ही संस्कृति का उद्देश्य है।

जो लोग लोक कल्याण के साथ साथ अपना भी कल्याण चाहते हैं, उन्हें उचित है कि वे उपरोक्त सांस्कृतिक आदर्शों के साथ महर्षि वसिष्ठ के इस उपदेश को भी ध्यान में रखें-

दीर्घं पश्यत माह्रस्वं, परं पश्यत माऽपरम्।
धर्मं चरत माऽधर्मं, सत्यं वदत माऽनृतम्।।

इसका सरल भावार्थ यह है कि दूर की बड़ी बात को भी देखो-समझो, केवल निकट की, आँख के आगे की साधारण बात पर ही ध्यान मत दो। सिद्धान्त को भी देखो, केवल तात्कालिक हानि-लाभ को विशेष महत्त्व मत दो। धर्म के अनुसार चलो, अधर्म के अनुसार नहीं; सत्य बोलो, मिथ्या नहीं। दूसरे शब्दों में, स्वार्थ के ऊपर कर्त्तव्य का ध्यान रखो।

('मनुष्य का विराट् रूप' से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला (10)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

आत्मानं कामाय सर्वं प्रिय भवति।

'आत्मा के लिये ही सब चीज प्रिय होती है।'

वर्मा ने इस सत्य का अनुभव किया। उसे आत्मा में प्रकाश और दर्शन हुआ। इस घटना में उसने आत्मा की विराटता को देखा। ज्यों-ज्यों आत्म सत्ता का महत्त्व प्रस्फुटित होता गया त्यों-त्यों संसार की सारी वस्तुएँ मुर्दा शरीर के समान उसे घृणित दिखाई देने लगीं। सत्यदर्शन ने वर्मा के जीवन को बदल दिया। क्लब सिनेमा का शौकीन चिन्तनशील बन गया। दर्शन, उपनिषद और सत्संग के नये क्षेत्र खुल गये। समय के साथ विचारों में परिपक्वता आती गयी। अन्ततोगत्वा नश्वर जगत की आसक्ति को लात मारकर उसने सत्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। दूसरी ओर गुप्त ने कुछ माह पश्चात् दूसरा विवाह कर लिया।

देखना जब दर्शन में बदल जाता है तब जीवन अपने आप परिवर्तित हो जाता है। बहिर्मुखता नष्ट होकर अन्तर्मुखी होने लगती है।

आत्मन्येवात्मनातुष्ट स्थित प्रज्ञस्तदोच्यते।

शान्ति-संतोष आत्मा से स्वयं प्रस्फुटित होने लगते हैं। यह आध्यात्म है। आत्मस्थ होने का अर्थ नहीं है कि आप कितनी देर आँख मूँद कर जड़ बने रह सकते हैं या भाव विह्वल होकर रो सकते हैं। आध्यात्म का प्रयोजन है कि आत्मबुद्धि होना। आत्मा का बुद्धि से जुड़ जाना। गीता का स्थित प्रज्ञ दर्शन आध्यात्म की स्पष्ट व्याख्या है। केवल धारणा और ध्यान को आध्यात्म मानने वाले लोगों को गीता के इस तथ्य को देखना चाहिए। गीता की स्थित प्रज्ञता धारणा ध्यान का खेल नहीं। यह स्वरूप स्थिति की वह चरम अवस्था है जहाँ कर्त्ता पूर्ण अन्तर्मुख स्थिति में कर्म करता है। हम इस प्रकरण पर सन्दर्भ के साथ विचार करें।

अर्जुन ने देखा कि गुरु उसे बुद्धि योग का उपदेश कर रहे हैं तथा अचंचल बुद्धि को उच्चतम स्थान दे रहे हैं।

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय
बुद्धौ शरणमान्विच्छ कृपणाः फल हेतवः

'हे अर्जुन सकाम कर्म अत्यन्त तुच्छ है और फल की वासना वाले होने से अत्यन्त दीन हैं। अतः तू बुद्धि की शरण ले।' अर्जुन संशय में पड़ गया। एक ओर सकाम कर्म की तुच्छता सिद्ध की जा रही है दूसरी ओर मुझे युद्ध में जो कि एक सकाम कर्म है, प्रवृत्त किया जा रहा है। बुद्धि की शरण लेकर सकाम कर्म के त्याग से युद्ध कैसे होगा। अर्जुन समझ नहीं पाया कि वह बुद्धियोग क्या उसे यह प्रश्न करना पड़ा-

स्थित प्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थित धीः किं प्रभाषेत् किमासीत् ब्रजेत किम्।।

उसने पूछा-'हे केशव! स्थित प्रज्ञ बुद्धि वाले का क्या लक्षण है? वह कैसे बोलता बैठता और चलता है?' अर्जुन इस बात को जानता था कि स्थित प्रज्ञ का अर्थ 'बको ध्यान व्यापार' नहीं है। तभी तो उसने पूछा-'स्थित प्रज्ञ कर्म, कैसे करता है? कैसे बोलता, चलता, बैठता है।' गीता स्थित प्रज्ञ दर्शन की जो व्यवस्था करती है वह स्वरूप स्थित की व्याख्या है। आत्मस्थित, स्थित प्रज्ञ, बुद्धियोग लगभग एक सा ही वाच्यार्थ प्रकट करते हैं। स्थितप्रज्ञ होने का अर्थ है विशेष जीवन दर्शन। सुख-दुःख आसक्ति, भय क्रोध इत्यादि के प्रति एक भिन्न दृष्टिकोण। जीवन की वस्तुपरक व्याख्या के स्थान पर आत्मपरक व्याख्या, स्थित प्रज्ञ दर्शन है। गीता के ये सुन्दर श्लोक।

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मा तुष्टः स्थित प्रज्ञस्त दोच्यते।।
दुःखेष्वनुद्विग्नमनः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतराग भय क्रोधः स्थित धीर्मुनिरुच्यते।।
यः सर्वत्रानभि स्नेह स्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठता।।
सदा संहरते चायं कूर्मोऽगानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रि यार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

आत्मभाव उत्पन्न हो जाने पर भौतिक एषणाएँ मन से निकल जाती हैं। मनोगतान् पद स्पष्ट करता है कि चित्त भौतिक इच्छाओं से रहित हो जाता है। नश्वर शरीर की कामना और सुख आसक्ति नहीं रहती। सुख और आनन्द अन्दर से मिलने लगता है। आत्मरमण साधन को सन्तुष्टि प्रदान करता है। आत्मा से निर्झरित होने वाला रस समूचे व्यक्तित्व को मधुमय कर देता है। रस राज सच्चिदानन्द आत्मा में व्यापक है। अतः अन्तर्मुखी होने पर वृत्ति उसका रसपान करने लगती है। जिसे पुष्पों का सारभूत मधु मिल जाये वह अंगूठा क्यों चूसेगा? भौतिक जगत की निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ उसे उद्वेलित न कर सकेंगे। अनश्वर, अजर, अमृत धाम में निरन्तर वास होने से हर प्रकार के भय निवृत्त हो जाते हैं। शुभ अशुभ ईर्ष्या और द्वेष के भाव केवल भय से ही जन्म लेते हैं। चूँकि आत्मस्थ पुरुष निर्भय होता है अतः यह मानसिक विकृतियाँ उसे छू भी नहीं पातीं। ऐसे व्यक्ति से होने वाले कर्म दिव्य होते हैं और संसार का कल्याण करते हैं। यह चारित्रिक गुण ही स्थित प्रज्ञ के लक्षण हैं। वाह्य चिन्ह अर्थात् तिलक-माला, घण्टा-घड़ियाल बजाना या आँख मींचकर बैठना और कुछ भले ही हों, स्थित प्रज्ञ के लक्षण नहीं हैं।

अतः मित्रों, इस उपलब्धि के लिये भागते मत फिरो। आँख बन्द करके बैठने से यह अनुभव नहीं होगा। इसके लिए आँख खोलकर देखना सीखो। अचेत होकर नहीं, सचेत होकर संसार को देखो। तुम्हारे चारों ओर रात-दिन हजारों ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं जो सत्य का सन्देश लाती हैं। तुम इस सत्य के स्वागत के लिये मन बुद्धि के द्वार खोल दो। स्थित प्रज्ञता और स्वरूप सिद्धि इसी से होगी। यह भूमा दर्शन है। इससे भिन्न अवस्था बिखराव है जो नरक है।

गीता में बिखरे हुए व्यक्तित्व का सजीव चित्रण किया गया है। खोखला व्यक्ति कैसा होता है, गीता कहती है-

ध्यायतों विषयान्पुशः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृति विभ्रमः
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धि नाशात्प्रणश्यति।

ऐसा व्यक्ति सर्वदा देह धरातल पर रहता है। इन्द्रियों के विषय ही उसका चिंतन होते हैं। स्थूल भोग के अतिरिक्त वह कुछ भी नहीं सोच सकता। नश्वर जगत ही उसकी महत्वाकांक्षा या जीवन की सार्थकता होती है। समाज, मानवता, उपकार, करुणा, मैत्री अहिंसा इत्यादि उसके समझ से बाहर के शब्द हैं। उसके कर्म की सीमा केवल भोग जगत है। भोग लिप्सा उसे सर्वदा स्नायविक तनाव उत्तेजना में रखती है। उसकी शरीर ग्रान्थियाँ रात-दिन श्राव करते रहने से दुर्बल हो जाती हैं। दिल दिमाग से उसका नियंत्रण हट जाता है। इच्छाएं अनुभव पर हावी हो जाती हैं। शॉपेन हावर ने ऐसे लोगों को इडियट संज्ञा दी है। उसने कहा कि-'मूर्ख वह है जो अपनी बौद्धिक चेतना को केवल पेट के लिए काम में लेता है।'

अतः भारत जो एक दर्शन है, जीवन का सत्य तुम्हारे सामने रखता है। स्वस्थ रहो अर्थात् आत्म स्थित रहो, भारत दर्शन का सन्देश है। ओढ़े हुए क्षणिक सम्बन्धों के कल्पित व्यक्तित्व से परे झाँककर देखो। देखो, जो भी कुछ दिखाई देता है जो भौतिक है, मरण धर्मा है, वह तुम्हारा स्वरूप नहीं है। इसलिए वृत्ति चांचल्य को त्याग कर अन्तर्मुखता प्राप्त करो। अपने स्व को मत तोड़ो। वर्ण धर्म जीवन की मर्यादा और दायित्व के दायरे को मत तोड़ो। मर्यादा की लक्ष्मण रेखा तोड़ने से सीता का अपहरण हुआ था। अगत तुम व्रतों के वर्तुल को तोड़ोगे तो दुःख और मृत्यु के द्वारा अपहृत कर लिए जाओगे। इसके अतिरिक्त सुख शान्ति को कोई मार्ग नहीं है। भारत का यह सन्देश सबके लिए है और सर्वकालिक है।

ओ३म् शान्ति!

(क्रमशः)

(पृष्ठ 3 का शेष.....)

रमेश चन्द्र.....

महिलाओं की शिक्षा आदि की व्यवस्था पर भी विचार किया जाना चाहिये। भावी पीढ़ी को संस्कारित करने हेतु बाल/किशोर/युवा हेतु उपयोगी कार्यक्रमों का समावेश प्रत्येक साप्ताहिक सत्संग में किया जाना चाहिए। समाज के सदस्यों हेतु शुद्ध उच्चारण शिविर, यज्ञ प्रशिक्षण शिविर, संस्कार प्रशिक्षण शिविर, संध्या संपादन शिविर, भजन प्रशिक्षण शिविर, प्रवचन प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित होने चाहिये पर यक्ष प्रश्न यह है कि इन्हें करे कौन? समाज में वानप्रस्थियों तथा संन्यासियों का अभाव होने के कारण पदाधिकारियों पर दायित्वों का अत्यधिक बोझ पड़ता है। समाज में सेवक की नियमित व्यवस्था कराये बिना ही, अस्थायी व्यवस्था में रखे गये व्यक्ति को समाज के सदस्यों के विरोध के कारण हटा दिये जाने से उन पदाधिकारियों की कठिनाइयां बढ़ी हैं जो समाज के दैनन्दिन प्रबन्ध में लगे रहते हैं इसका समाधान होना अत्यावश्यक है। संस्कारों के सम्पादन हेतु नियमित पुरोहित भी होना चाहिए। कुल मिलाकर चुनौतियाँ अत्याधिक हैं। योजनाएं बनाकर आर्य समाज के मुख्य उद्देश्यों को पूर्ण करके महर्षि को श्रद्धांजलि देना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। इस हेतु सबसे अधिक आवश्यकता है शारीरिक सेवा एवं समयदान। इस हेतु सदस्यों को आगे आना चाहिए तथा समष्टिगत कार्यों हेतु व्यष्टिगत कर्यो, समय का दान करने हेतु तत्पर रहना चाहिए।

जनवरी २०१६ से मैं वानप्रस्थ में जाऊँगा। तब तक मैं समाज की सेवा हेतु उपलब्ध हूँ। समाज में विभिन्न पदों पर सेवा में सभी से यथोचित सहयोग मिला। इस हेतु समाज के सभी सदस्यों को उनके सहयोग हेतु धन्यवाद देता हूँ।

वर्ष २०१४ में जो भी अच्छे कार्य हुए उनका श्रेय सभी सदस्यों को देते हुए उन लोगों को भी धन्यवाद देता हूँ जो किन्हीं व्यक्तिगत कारणों से सहयोग नहीं कर पाये परन्तु उनके मन में भविष्य में सहयोग एवं सेवा की इच्छा अंकुरित हो रही है।

[आर्य समाज इन्दिरानगर की ०४.०१.१५ की वार्षिक बैठक में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित हुआ कि आगामी वर्ष २०१५ में भी वर्तमान कार्यकारिणी कार्य करती रहेगी।]

thearyasamaj.org

काव्यायन

होली के दोहे

रचनाकार- डॉ. वेद प्रकाश आर्य

श्री प्रणव मुखर्जी, राष्ट्रपति

प्रणव मुखर्जी कर रहे, प्रणव-ओं का जाप।
नाम यथा गुण भी तथा, हरैं व्यथा संताप।।

श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी, प्रधानमंत्री

सूट पहन कर खेलते, मोदी होली खेल।
जादू टोना कर गई, जबसे मिसेज मिशेल।।

श्री लालकृष्ण आडवाणी, पूर्व उपप्रधानमंत्री

आडवाणी को चाहिए, पी एम पद सिरमौर।
श्रीजिन्ना की कब्र पर, एक फातेहा और।।

श्री अमित शाह, बीजेपी अध्यक्ष

अमित शाह की नीति की, मिली न कोई थाह।
दिल्ली बीजेपी उठै, अर्जों कराह कराह।।

श्री राजनाथ सिंह, गृहमंत्री

मोदी को घोषित किया, पी एम कंडीडेट।
राजनाथ ने कर दिया, राजनीति अपडेट।।

श्री अरुण जेटली, वित्तमंत्री

अरुण जेटली ने किया, होली को रंगीन।
घर में खाली केटली, चूल्हा गैसा विहीन।।

श्री सुरेश प्रभु, रेलमंत्री

होली में प्रभु की चली, रेल बुलेट टिपटाप।
प्लेटफार्म पर आज भी, रहे मुसाफिर टाप।।

श्रीमती स्मृति ईरानी, मानव संसाधन मंत्री

दिल्ली सीएम पद टिकट, गया किरन के पास।
स्मृतिजी का उठ गया, ज्योतिष से विश्वास।।

श्री गडकरी, पूर्व बीजेपी अध्यक्ष

हटे गडकरी मार्ग से, आरोपों का जाल।
मोदी पीएम बन गये, चतुर केजरीवाल।।

श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद, सीएम, कश्मीर

केसर क्यारी में मचा, होली में अंधेर।
किये कराये पर रहे, मुफ्ती पानी फेर।।

साध्वी निरंजन, केन्द्रीय राज्यमंत्री

भूलीं होली रंग में, मंत्री पद व्यवहार।
साध्वी होकर कर रहीं, संतति-वृद्धि प्रचार।।

सुश्री उमा भारती, केन्द्रीयमंत्री

होली के रंग में रंगी, सक्रिय उमा प्रबुद्ध।
गंगा होकर कर रहीं, गंगाजल को शुद्ध।।

श्री प्रवीण तोगड़िया, नेता विहिप

तोड़फोड़ विख्यात है तोगड़िया का नाम।
होली के हुड़दंग में, संयम का क्या काम।।

श्री मुरली मनोहर जोशी, पूर्व केन्द्रीयमंत्री

होली के हुड़दंग में, बाधाएँ बेहाल।
महबूबा से भेंट कर, मुरली हुए निहाल।।

श्री मुलायम सिंह यादव, सपा प्रमुख

बने मुलायमसिंह जी, होली मध्य द्विरेफ।
दुनिया जाये भाड़ में, रहे सैफई सेफ।।

श्री अखिलेश यादव, मुख्यमंत्री उप्र

यूपी में है बह रही, शीतल सुखद बयार।
एक फूल अखिलेश हैं, लेकिन काँटे चार।।

श्रीमती डिम्पल यादव, संसद सदस्य

पिम्पल की चिन्ता नहीं, सिम्पल रखती ढंग।
डिम्पल यादव भर रहीं इक्जाम्पल में रंग।।

श्री योगेन्द्र यादव, संस्थापक सदस्य, आप

पतझारों का चढ़ रहा, मृदु बसंत में ग्राफ।
इधर हुआ योगेन्द्र का, जड़ से पत्ता साफ।।

श्री प्रशान्त भूषण, संस्थापक, आप

होली के रंग में रंगे, सराबोर अक्लांत।
यद्यपि नाम प्रशान्त है, रहते सदा अशान्त।।

आई होली!

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

ले के फागुन की बहारें लो! फिर आई होली,
भर लो ऐ दोस्तो! उल्फत के रँगों से झोली।

कोई चाचर है सुनाता कोई गाता है गज़ल,
फिर रही प्यार के प्यासों की अनोखी टोली।

ढल गये इन्द्रधनुष के यहाँ साँचे में लोग,
प्यार के रंगों में भीगे सभी दामन-चोली।

खुद को रँगवाने सभी दौड़ पड़े उसकी तरफ़,
प्यार से उसने जो रंगो की पिटारी खोली।

सुनके धुन मुरली की बेसुध हुई राधा ऐसी,
चूक से अपनी ही खुद अपनी भिगोली चोली।

मुसकराती है तो मोनालिसा लगती है कोई,
और मिस्री से भी मीठी है किसी की बोली।

ढूढ़ते रह गये हुलियारे उन्हें अपने बीच,
जाने कब कृष्ण के सँग चुपके से राधा हो ली।

याद आने लगी मुझको भी अचानक 'नासिर',
एक राधा ने कभी खेली थी मुझसे होली।

—जी—02, लोरपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

बासंती मुक्तक

❑उमेश 'राही'

प्यार के पर्व पर आओ हम गुलाल
की तरह मलाल को मसल डालें।
नफरत के सूखे पल्लवों को जला,
मोहब्बत की महकती फसल डालें।
होली की होलिका में जला दें
सारे गम और शिकवे-गिले सारे
जिसमें सिर्फ बुराई का ही अक्स
आता हो वह आईना बदल डालें।।

महकते मौसमों की गंध ने
यह संदेशा दिया है।
हवा की बांह में मधु ऋतु
मनाता उसका पिया है।
मधुवन मगन है फूलों की
दुल्हनों के संग रात में-
धरा को अंक में भरने को आतुर
हुआ नभ का दिया है।।

अब तक रही जो सूनी
वह मांग सिन्दूरी हो जाए।
देह की आत्मा से अब
खत्म सारी दूरी हो जाए।
युगों से आस थी बूंद की
कि सीप में मोती बनूँ-
मेघ! ऐसा बरसो कि यह
साध भी पूरी हो जाए।।

कला सदन, 363ए/4, मोती नगर, लखनऊ

श्री आजम खाँ, मंत्री, उप्र

जो कुछ यहाँ अनर्थ सब, मोदी की करतूत।
आजम के सिर पर चढ़ा, मोदी जी का भूत।।

श्री नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री, बिहार

माँझी मूषक को दिया, सिंह सदृश आकार।
पुनः 'मूषको भव' कहा, ऋषि नीतीश कुमार।।

चौ. राजेन्द्र सिंह, मंत्री, उप्र

यत्र तत्र सर्वत्र हैं घूम रहे स्वच्छंद।
जहां जहां अखिलेश हैं, वहां वहां राजेन्द्र।।

श्री तेज प्रताप, सांसद, सपा

पीएम सीएम हैं खड़े, डीएम अपने आप।
लालू जी लक्ष्मी सहित, ऐसा तेज प्रताप।।

श्री शशि थरूर, पूर्व विदेश राज्यमंत्री

गई सुनन्दा स्वर्ग को, दिल में पड़ी दरार।
चढ़ा शुरूर थरूर पर, जब से मिली तरार।।

श्री राहुल गाँधी, कांग्रेस के युवराज

विरह कमंडल कर लिए वैरागी दो नैन।
राहुल गांधी डोलते, वन पर्वत बेचैन।।

श्री मनीष सिसोदिया, उपमुख्यमंत्री, दिल्ली

देना हो तो इस तरह, सबको दे जगदीश।
हर्रा लगे न फिटकरी, सीएम बने मनीष।।

श्री अरविन्द केजरीवाल, मुख्यमंत्री, दिल्ली

सत्ता सौंप मनीष को, बिजली पानी माफ।
कर योगेन्द्र प्रशान्त का, जड़ से पत्ता साफ।।
चतुर केजरीवाल जी, उलझा करके डोर।
उठा कमंडल चल दिये, करनाटक की ओर।।

श्री अमृत खरे

होली-पतझड़ है सभी, जिनको एक समान।
वेद ऋचाएँ कर रहीं, अमृत का गुणगान।।

श्री उमेश श्रीवास्तव 'राही'

छोड़ अर्चना वंदना, आदाबर्ज सलाम।
राहीजी हैं कह रहे, ओ माँ, तुझे प्रणाम।।

डॉ. मिर्जा हसन नासिर

आर्यलोकवार्ता सुकवि, नासिर रस की खान।
घनानंद वन घूमते, कहत सुजान सुजान।।

श्री अनूप श्रीवास्तव, सम्पादक अट्टहास

होली के हुड़दंग में, पड़ी भंग में कूप।
अट्टहास में दे रहे, उत्तर अजब अनूप।।

पं.हरिओम शर्मा 'हरि', सम्पादक पब्लिक की आवाज

अगर पिताजी सूर्य हैं, माता जी हैं सोम।
मात-पिता की आरती, गाते शर्मा ओम।।

डॉ. कैलाश निगम

प्राप्त शारदा से किया, काव्यसृजन विश्वास।
दीवान-ए-कैलाश के, दीवाने कैलाश।।

श्री रमनलाल अग्रवाल रमन लखनवी

वफा जफा को कर दफा, रचते छंद ललाम।
रमन लखनवी ने लिया, हिन्दी का ध्वज थाम।।

श्री रंगनाथ मिश्र 'सत्य'

रंगनाथ के सत्य से, सका न कोई जीत।
हैं अगीत के जनक पर, गाते रहते गीत।।

श्री महेश चन्द्र द्विवेदी, पूर्व डीजीपी, उप्र

होली के हुड़दंग में, ज्ञान प्रसार विशेष।
गीत नीरजा लिख रहीं, गाते गान महेश।।

श्री नरेन्द्र भूषण, संस्थापक अनन्त अनुनाद

स्वर व्यंजन के बिना ही, होली में है स्वाद।
श्री नरेन्द्र भूषण करें, अन्तहीन अनुनाद।।

डॉ. एम. एल. अग्रवाल, भाषा प्रतिष्ठापन संस्थान

बहुत किया साहित्य ने, कृषकों का उद्धार।
कृषि वैज्ञानिक कर रहे, अब भाषा संस्कार।।

डॉ.रूपचन्द्र दीपक, आचार्य कुलम् हरिद्वार

प्रोज्ज्वल करके लखनऊ, यूपी में कर स्वीप।
दीप्त उत्तराखंड में, रूपचन्द्र का दीप।

thearyasamaj.org

राजस्थान-समाचार

ऋषि बोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया

कोटा, १७ फरवरी। महर्षि दयानन्द सरसवती नवजागरण के प्रवर्तक थे। शिवरात्रि के अवसर पर हुए बोध से बालक मूलशंकर घर से निकल पड़ा और बन गया स्वामी दयानन्द सरस्वती। उक्त विचार वैदिक प्रवाचक आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में आयोजित बोधोत्सव समारोह के अवसर पर व्यक्त किये। कोटा की समस्त आर्य समाजों द्वारा संयुक्त रूप से मनाये गए समारोह में उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द ने अपने विचारों के माध्यम से सुप्त पड़े समाज को जगाया जिससे नवक्रान्ति का सूत्रपात हुआ। उन्होंने समाज सुधार के महत्त्वपूर्ण कार्य किये।

इस अवसर पर डीएवी स्कूल कोटा के धर्मशिक्षक पं.शोभाराम ने महर्षि दयानन्द द्वारा बतलाए गए ईश्वर के सच्चे स्वरूप का वर्णन किया। आर्य समाज विज्ञान नगर के मंत्री राकेश चढ्ढा ने जानकारी देते हुए बताया कि ऋषि बोधोत्सव के इस कार्यक्रम में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके पुरोहित पं.जे.एस. दुबे थे तथा यजमाता कौशल रस्तोगी एवं परिवार था। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा ने कहा कि स्वामी जी ने अंधविश्वास एवं पाखण्ड को समजा के विकास में बाधक बतलाया साथ ही सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु अलख जगाई। *(राकेश चढ्ढा)*

टंकारा से लौटे आर्य दल का सम्मान

कोटा, २२ फरवरी। महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में आयोजित ऋषि बोधोत्सव में सम्मिलित हुए प्रतिनिधियों का आर्य समाज जिला सभा द्वारा आर्य समाज विज्ञान नगर में माल्यार्पण कर स्वागत व सम्मान किया गया। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली से लौटे प्रतिनिधि आर्य समाज के माध्यम से समाज सेवा व महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ायेंगे। आर्य प्रतिनिधियों के दल से संयोजक उमेश कुर्मी व श्योराज वशिष्ठ ने बताया कि २० व्यक्तियों के दल ने आर्य समाज अहमदाबाद में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन कार्यक्रम टंकारा में ऋषि बोधोत्सव के कार्यक्रम के साथ ऐतिहासिक नगरी द्वारका राजकोट, पोरबंदर एवं सोमनाथ मंदिर व साबरमती आश्रम का भी भ्रमण किया। आर्य समाज गुजरात के प्रधान सुरेश चंद्र अग्रवाल व मंत्री हंसमुख भाई परमार का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर जिला आर्य समाज के मंत्री कैलाश बाहेती, कोषाध्यक्ष जे.एस.दुबे, प्रचार मंत्री अरविन्द पाण्डे, उपप्रधान श्रीचंद गुप्ता, रामदेव शर्मा, आर्य समाज तलवण्डी के प्रधान रघुराज सहित आर्य सभासद उपस्थित थे। *(अरविन्द पाण्डेय)*

सीतापुर-समाचार

मिश्रिख परिक्रमा मेला में आर्य समाज का प्रचार

वर्षों से आर्य समाज सीतापुर के सहयोग से मिश्रिख मेले में आर्य समाज का कैम्प लगता रहा है तथा धुआँधार प्रचार होता रहा है। उसी क्रम में इस वर्ष भी २, ३, ४ मार्च २०१५ को महर्षि मिशन हास्पिटल के प्रांगण में प्रधान श्री बाँके लाल आर्य की अध्यक्षता में प्रचार की व्यवस्था की गई। नित्य यज्ञ हवन के साथ ही विद्वानों, संतों के प्रवचन तथा भजन होते रहे। प्रख्यात गायक संजीव 'रूप' तथा शंकर स्वामी को आमंत्रित किया गया। श्री नेतराम आर्य, महावीर स्वामी, रामेन्द्र कुमार आर्य तथा वरिष्ठ नेता श्री वीरजी का यथेष्ट सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। गरीब जनता की सेवा की दृष्टि से डॉ.रस्तोगी के प्रयत्न से निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगातार क्रियाशील रहा। *(डॉ.एस.के.रस्तोगी-संयोजक)*

राजा टोडरमल जयन्ती

सीतापुर, १० फरवरी। सम्राट अकबर के प्रमुख नवरत्न, वित्तमंत्री एवं भूविज्ञ राजा टोडरमल की ५१२वीं जयन्ती संजयपुरी, अध्यक्ष राजा टोडरमल स्मारक समिति के संयोजकत्व में तहसील सदर सीतापुर के राजा टोडरमल पार्क प्रांगण में मनायी गई जिसकी अध्यक्षता डॉ.अर्चना द्विवेदी उपजिलाधिकारी ने की। मुख्य अतिथि गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' (प्रणेता राजा टोडरमल खण्डकाव्य) तथा विशिष्ट अतिथि नीरज वर्मा, जयनाथ कपूर एवं आशीष मिश्रा थे। अतिथियों के अतिरिक्त गिरीश मिश्रा, वीरेन्द्र तिवारी, विपिन मेहरोत्रा, सुनील टण्डन, प्रवीण शुक्ला, पी. के.तोमर, कपिल जायसवाल आदि गण्यमान्य व्यक्तियों ने विचार व्यक्त किये। श्री 'विनम्र' ने अपने खण्डकाव्य से काव्यांश प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में राम कुमार गुप्ता की अध्यक्षता एवं 'विनम्र' के संचालन में काव्य गोष्ठी हुई जिसमें अरुण मिश्र, रामदास वैश्य 'रामू', सुधांशु त्रिवेदी, वीरेन्द्र तिवारी, चन्द्र गुप्त श्रीवास्तव, राज कुमार श्रीवास्तव आदि सुकवियों ने मधुर रचनाओं से श्रोताओं को रससिक्त किया। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

हिन्दी सभा की 25वीं कार्यकारिणी गठित

समाज सेवा संघ पुस्तकालय लालबाग उद्यान सीतापुर में हिन्दी सभा की २५वीं कार्य कारिणी का गठन किया गया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में अध्यक्ष पद के लिये डॉ.रमेश मंगल वाजपेई को शपथ दिलाई गई। तत्पश्चात् महामंत्री पद की शपथ दिनेश मिश्र 'राही' को दिलाई गई। सम्पूर्ण कार्यकारिणी इस प्रकार है-डॉ.रचना भारतीय-वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अनुराग गुप्त-कनिष्ठ उपाध्यक्ष, राम गोपाल अवस्थी-साहित्य मंत्री, डॉ.मनोज दीक्षित-सामान्य मंत्री, गोपाल टण्डन- प्रचार मंत्री, राकेश कुमार गुप्त-पुस्तकालय मंत्री, रविकान्त त्रिवेदी-कोषाध्यक्ष, श्रीमती निवेदिता पाण्डेय-सम्प्रेक्षक। कार्यकारिणी सदस्य-सर्वश्री अम्बरीश श्रीवास्तव, श्रीमती विनोदिनी रस्तोगी, डॉ.जयप्रकाश अवस्थी, अमित श्रीवास्तव, भगवती प्रसाद गुप्त।

महामंत्री श्री दिनेश मिश्र 'राही' ने आये हुए सभी अतिथियों और सभागार में उपस्थित अभ्यागत जनों का आभार प्रकट किया। *(दिनेश मिश्र 'राही')*

हरदोई-समाचार

ऋषि बोध पर्व

ऋषि बोध पर्व आर्य समाज मन्दिर सण्डीला में समारोह पूर्वक सोल्लास मनाया गया। यज्ञ-हवन के उपरान्त डॉ. सत्य प्रकाश तथा अन्य वक्ताओं ने ऋषि दयानन्द के जीवन और आदर्शों पर प्रकाश डाला।

मेला प्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, हरदोई के तत्वावधान में एक माह तक चलने वाले मेला-नुमाइश के अन्तर्गत आर्य समाज के प्रचार का पंडाल लगाया गया। नित्य प्रातः यज्ञ के उपरान्त विभिन्न विद्वानों के उपदेश और भजन होते रहे; जिसमें जनपद की जनता ने बड़े चाव से हिस्सा लिया। वेद प्रचार के ट्रैक्ट बांटे गये तथा पुस्तक विक्रय की व्यवस्था की गई।

महर्षि जन्म दिवस

१२.०२.१५ को आर्य समाज हरदोई के तत्वावधान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस मनाया गया। प्रातःकाल यज्ञ के पश्चात् अनेक विद्वानों ने महर्षि के उपकारों का विश्लेषण किया। शोभायात्रा निकाली गई। समारोह में ख्यातिलब्ध भजनोपदेशक श्री जुगुल किशोर आर्य के भजन हुए तथा श्री विमल कुमार एडवोकेट, श्री बी.डी.शुक्ल पूर्व प्रिंसिपल तथा फर्रूखाबाद के स्वामी जी के व्याख्यान हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आर्येन्द्र पाण्डेय, प्रधान जिलासभा हरदोई ने की।

आर्य समाज गोनी का वार्षिक उत्सव

२३, २४, २५ फरवरी २०१५ को हरदोई जनपद की अत्यंत प्रतिष्ठित एवं प्राचीनतम आर्य समाज गोनी का वार्षिक उत्सव समारोह पूर्वक श्री विमल कुमार एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जनपदीय वक्ताओं के अलावा विशेष रूप से प्रख्यात भजनोपदेशक श्री जुगुल किशोर आर्य तथा धनुर्विद्या का आकर्षक प्रदर्शन भी हुआ जिसका ग्रामीण जनता पर भारी प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज गोनी का आर्य समाज मंदिर जो विख्यात पूर्वजों शिवरक्षण शर्मा, पं.चुन्नीलाल पांडे, पं.देवदत्त वैद्य, ब्रज नाथ शर्मा, स्वामी भूपसिंह, महाशय छोटे लाल, श्री विष्णु कुमार शुक्ल इत्यादि के प्रयत्नों से निर्मित हुआ, सम्प्रति जीर्ण शीर्ण दशा में है। मंदिर का जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण अत्यंत आवश्यक है जिससे इस पुरानी धरोहर को नई पीढ़ी के लिए सुरक्षित किया जा सके। धर्मप्रेमी दान दाताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाता है। कृपया वे श्री विमल कुमार एडवोकेट से सम्पर्क स्थापित करें तथा दानराशि द्वारा पुण्य के भागी बनें। चलभाष नम्बर-09451209682।

श्रद्धांजलि

शान्तिधर्मी-सम्पादक
पं. चन्दभानु आर्य

राजा या कि कोई रंक जिसने लिया है जन्म
संसृति में चले जाना उसका है अपरिहार्य।
किन्तु कुछ लोग ऐसे होते हैं, महत्कार्य
पूरा करते हैं लक्ष्य जीवन में जो अनिवार्य।
उनमें भी किन्तु कुछ ऐसे होते हैं प्रवीर,
ऋषि दयानन्द के विचार कर शिरोधार्य।
बन शान्तिधर्मी हैं गुँजाते वेद - शंखनाद-
ऐसे ही श्रेष्ठ मानव थे पंडित चन्द्र भानु आर्य।।

निधन - २०.१२.२०१४

बाराबंकी-समाचार

बुझ गई समाजसेवा की मशाल

बाराबंकी जनपद के भिटरिया परिक्षेत्र को समाजसेवा, त्याग, कर्तव्यपरायणता परोपकार और गरीब जनता की सेवा की जो मशाल लगभग छः दशकों से आलोकित कर रही थी- वह १४ फरवरी २०१५, रविवार को प्रातःकाल सहसा बुझ गई और छोड़ गई अपने पीछे कृतज्ञ क्षेत्रीय नर नारियों की अश्रुपूरित कतारें। अंतिम विदा से पूर्व उन्होंने अपनी डायरी में एक अत्यन्त भावगाम्भीर्य से परिपूर्ण छंद लिखा था- जिसे उनके पुत्र-पुत्रियों ने श्रद्धांजलि यज्ञ के अवसर पर बैनर पर लिखवा कर चित्र सहित दीवार पर टांग रखा था। सभी को आकृष्ट करने वाली वे पंक्तियां इस प्रकार हैं-

जीवन का क्रम यही, मानव का भ्रम यही,
एक एक क्षण यों गँवाता चला जाता है।
कोंपले निकलती है, हरीतिमा उगलती हैं,
एक एक पत्त पियराता चला जाता है।
साथियों के संग कोई, कोई परिवार संग,
निज कर्त्तव्य को निभाता चला जाता है।
'राधा' अगम्य पथ, बीहड़ यह जीवन है-
आता है कोई और कोई चला जाता है।।

शान्तियज्ञ एवं शोक सभा में शोकाकुल महिलाओं का समूह मौजूद था। आर्य समाज बाराबंकी के डॉ.रामनारायण वर्मा, पं.राममोहन ओझा, श्री रामकुमार, श्री केदार नाथ आर्य रूदौली एवं दयाशंकर जी प्रधान आर्य समाज रामसनेही घाट ने श्रद्धांजलि अर्पित की। आर्य समाज और वैदिक धर्म की मान्यताओ का आपने विषम परिस्थितियों में भी निर्वाह किया। मृत्यु के पश्चात् आपके पास 'संस्कार विधि' ग्रंथ में अन्त्येष्टि संस्कार अध्याय पर लगा हुआ पुस्तक चिन्ह मिला। आपकी इच्छानुसार वैदिक विधि से आर्य समाज के प्रधान श्री दयाशंकर के निर्देशन में आपकी अन्त्येष्टि की गई। २०.०२.१५ को आयोजित शान्ति यज्ञ में डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा कि डॉ.शुक्ला के निधन से आज मुझे वही दुखानुभूति हो रही है, जो एक भाई को अपनी बहन के अवसर पर होती है। वे मेरी बड़ी बहन के समान थीं और मुझे भैया कहकर पुकारती थीं। 'आर्य लोक वार्ता' से वे प्रारंभ से ही जुड़ी हुई थीं तथा अपना सहयोग देना कभी नहीं भूलती थीं। आपने कहा- डॉ. शुक्ला को भावी पीढ़ियाँ याद करेंगी क्योंकि वे कोई सांसद, विधायक या सरपंच नहीं थीं फिर भी उन्होंने कई दशक तक भिटरिया क्षेत्र की सामान्य जनता के दिलों पर शासन किया। आप अपने पीछे नीरज और पंकज दो पुत्रों तथा दो पुत्रियों का परिवार छोड़ गई हैं। आपके दामाद श्री द्विवेदी चिकित्सक तथा विमल किशोर पाण्डेय बैंक मैनेजर हैं।

प.बंगाल-समाचार

विश्वभारती शान्तिनिकेतन

आचार्य देवकीनन्दन श्रीवास्तव व्याख्यानमाला के प्रथम व्याख्यान का शुभारम्भ दि. २ फरवरी २०१५ को 'हिन्दी भवन' के सभागार में सम्पन्न हुआ। निर्धारित कार्यक्रमानुसार अतिथियों के आसनग्रहण, तिलक, दीप प्रज्ज्वलन, पुष्प-स्तवक सम्प्रदान एवं अतिथि वक्ता डॉ.उमाशंकर शुक्ल को उत्तरीय भेंट के उपरान्त श्री अदिति द्वारा मंगलाचरण के रूप में 'ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियां' का सुमधुर गायन प्रस्तुत किया गया। प्रो.मुक्तेश्वर नाथ तिवारी, कार्यकारी अध्यक्ष, हिन्दी विभाग ने स्वागत भाषण के उपरान्त विश्वभारती में आयोजित होने वाली विविध व्याख्यानमालाओं का परिचय देते हुए उसी महिमामयी शृंखला में आचार्य देवकीनन्दन श्रीवास्तव व्याख्यानमाला का महत्त्वांकन किया। इस व्याख्यानमाला का आयोजन प्रतिवर्ष भविष्य में भी प्रो.श्रीवास्तव जी के जन्म दिवस के अवसर पर होता रहेगा। प्रो.तिवारी ने प्रो.श्रीवास्तव जी के जीवन-परिचय के साथ ही उनके विराट् साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व सहित उनकी विशिष्ट उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डाला और इस प्रथम व्याख्यान के शुभारम्भकर्त्ता डॉ.शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का भी परिचय दिया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रो. रवीन्द्र नाथ मिश्र द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो.मुक्तेश्वरनाथ तिवारी ने किया।

आवश्यक सूचना

पत्र-व्यवहार आदि के लिये कृपया शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें- डॉ. वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016

thearyasamaj.org

लखनऊ-समाचार

उमेश राही की अनुपम कृति 'माँ, तुझे प्रणाम'
विमोचन एवं सम्मान समारोह

लखनऊ का प्रेस क्लब दि. १५.०२.२०१५ को एक ऐसे ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बना, जबकि प्रख्यात कवि श्री उमेश श्रीवास्तव 'राही' की अमर कृति 'माँ, तुझे प्रणाम' का विमोचन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय ने की तथा श्री आनन्द मिश्र 'अभय' (सम्पादक-राष्ट्रधर्म) ने मुख्य अतिथि का पद सुशोभित किया। अ.भा.अगीत परिषद के अध्यक्ष डॉ.रंगनाथ मिश्र 'सत्य' तथा केन्द्रीय योजना आयोग के पूर्व सलाहकार डॉ.सुल्तान शाकिर हाशमी विशेष अतिथि के रूप में समारोह की गरिमा की वृद्धि कर रहे थे। इस अवसर पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता को उनकी पाँच दशकीय साहित्यिक सेवाओं के लिए 'कलारत्न' सम्मान से समादृत करके 'कला सदन' ने अपने को गौरवान्वित अनुभव किया। कला सदन के महामंत्री श्री रमाकान्त मिश्र को उनके साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

भव्यतापूर्ण इस समारोह के संयोजक थे- 'अनन्त अनुनाद' के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र भूषण। लखनऊ के पूर्व विधायक श्री सुरेश श्रीवास्तव ने इस अवसर पर श्री राही के कृतित्व पर अपने सार्थक विचार रखे। डॉ.ललिता खन्ना एवं श्रीमती शशिबाला श्रीवास्तव की समारोह में उपस्थिति महत्वपूर्ण थी। राही जी ने अपनी काव्य कृति के कुछ भावपूर्ण अंशों का पाठ किया। कला सदन और कवि लेखक श्री श्रीशरत्न पाण्डेय ने डॉ.वेद प्रकाश आर्य को मानपत्र भेंट किया। मानपत्र में डॉ.आर्य की हिन्दी सेवा, पांच दशकों में लिखित पांच सौ निबंधों, ११ पुस्तकों, ३ महत्वपूर्ण ग्रंथों (हिन्दी बरवै काव्य, सूर का कृतित्व व्यक्तित्व, अमृत पुत्रो सुनों) उत्तर से दक्षित तक प्रचार यात्राओं, काव्य पाठ एवं व्याख्यान तथा अध्यापन क्षमता का उल्लेख किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री के.पी.त्रिपाठी 'पुंज' ने किया।

'राही' जी की पुस्तक 'माँ तुझे प्रणाम' के सम्बन्ध में डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा- राही जी के पास अभिव्यक्ति एवं अभिव्यंजना का विपुल भण्डार है, उनकी रचनाएँ जनसामान्य की आकांक्षाओं को प्रदर्शित करती हैं तथा समाज का मार्गदर्शन भी करती हैं। 'माँ तुझे प्रणाम' उनकी ऐसी कृति है जिसकी छवि अनन्त काल तक धूमिल नहीं हो सकती है।

इस अवसर पर काव्य गोष्ठी भी सम्पन्न हुई जिसमें अमृत खरे, डॉ.कैलाश निगम, हरिप्रकाश हरि, डॉ.नलिनी खन्ना, गौरीशंकर 'विनम्र', घनानन्द 'मेघ', हरि मोहन 'माधव', प्रत्यूषरत्न पाण्डेय, कृष्णानन्द राय, श्रीमती शशिबाला, कुशुमेश, शिव मंगल सिंह, राम औतार 'पंकज', अरविन्द झा, अनिल श्रीवास्तव, सिद्धेश्वर, राम प्रकाश, रवीन्द्र नाथ तिवारी, मुरली मनोहर निर्दोष आदि लगभग दो दर्जन कवियों ने सरस कविताएँ प्रस्तुत कीं।

जोशी जी स्वदेश वापस

०१.०३.१५। आर्य समाज आदर्श नगर के पूर्व प्रधान पं.मदन मोहन जोशी विगत छः महीनों से अपने पुत्र श्री आशीष जोशी, जो अमेरिका के बड़े प्रतिष्ठान के अधिकारी हैं, के पास अमेरिका ह्यूस्टन नगर में रह रहे थे। जोशी जी के स्वदेश वापस आने से आदर्श नगर आर्य समाज में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। आर्य लोक वार्ता के सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने ०८.०३.१५ को जोशी जी के आवास पर भेंट कर कुशलक्षेम ज्ञात किया तथा उनके पूर्ण स्वस्थ होने की कामना की।

डॉ.निष्ठा विद्यालंकार को पुत्ररत्न की प्राप्ति

२०.०२.१५। हर्ष और संतोष का विषय है कि आर्य जगत की प्रख्यात विदुषी डॉ.निष्ठा विद्यालंकार को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई है। माता और पुत्र दोनों ही स्वस्थ हैं। निष्ठा जी अपने पति श्री समीर कुमार एडवोकेट के साथ अपने घर विकास खण्ड-२, गोमती नगर में रह रही हैं। 'आर्य लोक वार्ता' की शुभकामनाएँ!

श्री अमृत खरे का ऑपरेशन सम्पन्न

२५.०२.१५। आर्य लोक वार्ता के प्रमुख स्तम्भ श्री अमृत खरे का आपरेशन दि. २५.०२.१५ को सफलतापूर्वक फोर्ड हास्पिटल, गोमती नगर में सम्पन्न हो गया। गाल ब्लाडर में पथरी के कारण अस्वस्थ चल रहे श्री अमृत का यह आपरेशन ख्यातिलब्ध सर्जन डॉ.पी.सी.गुप्त द्वारा किया गया। हम सभी श्री अमृत के शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

आर्य समाज की विशाल एवं भव्य शोभायात्रा

महर्षि दयानन्द सरस्वती की बोधरात्रि-शिवरात्रि के पावन पर्व पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ के तत्वावधान में विशाल शोभायात्रा १७ फरवरी को श्रीमद्दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर से प्रारम्भ हुई तथा डी.ए.वी.कालेज, नाका हिंडोला, गणेशगंज, अमीनाबाद होकर गंगाप्रसाद रोड, नगर आर्यसमाज रकाबगंज पर समाप्त हुई। शोभायात्रा का नेतृत्व श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी प्रधान एवं श्री प्रत्यूष रत्न पाण्डेय मंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा ने किया। शोभायात्रा में नगर आर्य समाज के मंत्री श्री रितेश रस्तोगी एडवोकेट, इकबाल शंकर श्रीवास्तव, धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया, श्रीमती मनोरमा वाजपेयी, चन्द्रभूषण शास्त्री इत्यादि का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। उत्सव में बैंड, ओमध्वज, नामपट्ट इत्यादि से सुसज्जित ट्रकों, कारों का लम्बा काफिला चल रहा था तथा शोभायात्रा की अग्रिम पंक्ति में आर्यनेता गण, महिलाएँ तथा गुरुकुलों के ब्रह्मचारी पैदल चल रहे थे।

ओजस्वी भजनों एवं जयघोषों से आकाश गूँज रहा था। स्थान स्थान पर पुष्प वर्षा, फल, मिष्ठान्न, चाय, पेय पदार्थों से शोभायात्रा का जनता ने दिल खोलकर स्वागत किया। शोभायात्रा में आर्य उपप्रतिनिधि सभा, नगर आर्य समाज, दयानन्द बाल सदन, गुरुकुल आश्रम जानकीपुरम, आर्य लोक वार्ता हिन्दी मासिक, आर्य समाज-शृंगार नगर, चन्द्र नगर, आदर्श नगर, इन्दिरा नगर, महावीर गंज, चौक, डालीगंज, सदर, तेलीबाग, एल.डी.ए.कालोनी, मोतीनगर, राजाजी पुरम, जानकीपुरम के अलावा अनेक व्यक्तिगत वाहनों ने सम्मिलित होकर शोभा यात्रा में प्रचंड आर्यशक्ति का परिचय दिया। *(सं.सू.-आलोक चौधरी, एडवोकेट)*

सम्पादक की डायरी

संस्थापक दिवस- दि.१५.०१.१५ : भारतीय विद्याभवन पब्लिक स्कूल, गोमती नगर में संस्थापक स्व.आर.के.गुप्त के स्मृति-दिवस का आयोजन किया गया। वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ; जिसमें विद्यालय की शिक्षिकाओं सहित श्रीमती मालती त्यागी, प्रधानाचार्या ने भाग लिया। ब्रिगेडियर आर.के.मिश्र (संस्थापक सदस्य) ने यजमान का आसन ग्रहण किया। वक्ताओं ने श्री आर.के.गुप्त की सेवाओं और कार्यकुशलता पर प्रकाश डाला।

शान्ति यज्ञ- दि.१६.०१.१५ : ५/६४, विराम खण्ड, गोमती नगर में श्री बद्री विशाल गुप्त की धर्मपत्नी स्व.श्रीमती ऊषा किरण की पुण्य स्मृति में शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। श्रीमती गुप्ता (७५) का निधन ३१.१२.१४ को हो गया था। यज्ञ में श्रीमती गुप्त के पुत्रों राजेश, अवधेश एवं सुदेश तथा पुत्रवधुओं श्रीमती मधु एवं बिन्दिया गुप्त ने भाग लिया। श्री बद्री विशाल गुप्त श्री रामलीला बालिका इंटर कालेज, पलिया कलाँ, जिला खीरी के प्रबंधक हैं। संयोजक-श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा।

गृह प्रवेश- दि.२५.०१.१५ : ई.एस.I/५, सेक्टर-ए, अलीगंज में श्री विवेक अवधवाल के नव निर्मित गृह में शाला-प्रवेश-यज्ञ वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पारिवारिक जनों ने बड़ी संख्या में उपस्थिति दर्ज की। यज्ञ में डॉ.जे.के.गुप्त सहित श्रीमती सुधा गुप्ता एवं विभा गुप्ता की उल्लेखनीय भागीदारी रही। संयो.-श्री आशुतोष।

शान्ति यज्ञ- दि.२८.०१.१५ : २६७-बी, मानव विहार, इन्दिरा नगर में स्व. मोहित त्रिपाठी की पुण्य स्मृति में शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि डी. आई.जी. आफिस, लखनऊ में एस.आई.एम.पद पर कार्यरत श्री मोहित त्रिपाठी (३४) की २५.०१.१५ को दुखद मृत्यु हो गई। वे अपने पीछे पत्नी भारती त्रिपाठी, पुत्र-शाश्वत तथा पुत्री अनन्या को छोड़ गये। इस अवसर पर श्री अनुराज अग्रवाल एवं धर्मेन्द्र गुप्त सहित स्व.त्रिपाठी के अनेक हितैषियों ने उन्हें अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। संयोजक-अनुराज अग्रवाल।

पारिवारिक यज्ञ- दि.०१.०२.१५ : सी-१०६२, इन्दिरा नगर में श्री मधुर अग्रवाल के आवास पर पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री अग्रवाल के समस्त पारिवारिक जनों ने श्रद्धा पूर्वक भाग लिया।

स्मृति दिवस- दि.०५.०२.१५ : बरौलिया, डालीगंज में प्रतिवर्ष की भांति पं. बनवारी लाल मिश्र के आवास पर स्व.प्रेमवती पांडे की स्मृति में यज्ञ-सत्संग का आयोजन सम्पन्न हुआ। यज्ञ में सम्पूर्ण परिवार की निष्ठा परिलक्षित हुई। श्री पंकज मिश्र एवं श्रीमती सारिका ने यजमान का पद ग्रहण किया तथा सुरेश, विजय कुमार, संतोष कुमार, हिमांशु, अनुराग मिश्र, लक्ष्य, ध्रुव, धैर्य के अलावा आकांक्षा, दीक्षा, प्रज्ञा, आरती, पिंकी, विश्वप्रभा आदि सभी पुत्र-पुत्रियों एवं पौत्रों ने यज्ञ में भाग लिया। यह आयोजन डॉ.अरविन्द नाथ पाण्डेय, कोषाध्यक्ष, आर्य समाज डालीगंज के संयोजकत्व में प्रतिवर्ष सम्पन्न होता है।

वसंतोत्सव- दि.०६.०२.१५ : बसंत पंचमी के पुण्य-प्रभात में महिला शक्ति मंडल द्वारा वैदिक यज्ञ का धर्मानुष्ठान श्री एस.एन.चतुर्वेदी के आवास ६, महानगर विस्तार, विज्ञान पुरी में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम प्रख्यात लेखिका डॉ.शान्तिदेव बाला के संरक्षण एवं निर्देशन में सम्पन्न हुआ। यज्ञ एवं भजन संगीत के अनन्तर प्रेम और श्रद्धा के वातावरण में प्रसाद वितरण किया गया। संयोजक-श्रीमती वीना गौतम।

नामकरण संस्कार- दि.०८.०२.१५ : आशीर्वाद क्लीनिक, गोमती नगर की बालरोग विशेषज्ञ डॉ.श्रीमती स्मृति आहूजा एवं डा.संजीव आहूजा की नवजात पुत्री 'सुदिति' का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। डॉ.संजीव के पूज्य पिता एवं माता प्रख्यात चिकित्सक डॉ.प्रेम आहूजा एवं डॉ. कंचन आहूजा का यज्ञ के प्रति विशिष्ट अनुराग देखने को मिला। आपकी प्रेरणा से आहूजा हास्पिटल क अनेक रोगियों के अभिभावकों ने भी यज्ञ में आहुतियाँ डालीं। डॉ. स्मृति के माता-पिता एवं पारिवारिक जन श्रीमती नरेश भूटानी, श्री सतीश कुमार एवं डॉ.सुशान्त और श्रुति भी कानपुर से आकर यज्ञ में सम्मिलित हुए एवं नामकरण संस्कार की कार्यवाही को श्रद्धापूर्वक देखा और सराहा। संयोजक-डॉ.संजीव आहूजा।

शुभकामना यज्ञ- दि.१०.०२.१५ : वैदिक प्रवक्ता श्री पाल प्रवीण की टंकारा-यात्रा प्रारंभ होने के पूर्व उनके आवास 'योगाश्रम' कमलेश कुटीर अलीगंज में वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न इस यज्ञ में पं.प्रेमशंकर शुक्ल, प्रधान आर्य समाज डालीगंज, ध्यानयोग विशेषज्ञ सेवकराम आर्य, वंशीलाल आर्य विकास नगर, डॉ.नरूला, श्रीमती शशि एवं प्रमोद कुमारी ने भाग लिया और भजन प्रस्तुत किये। श्रीमती कमलेश एवं श्री पाल प्रवीण ने यजमान का आसन ग्रहण किया।

यज्ञ-सत्संग- दि.१४.०२.१५ : बी-१/२४६, प्रियदर्शिनी नगर, सीतापुर रोड में संयुक्त शिक्षा निदेशिका (से.नि.) कु.ऊर्मिला शुक्ल एवं कु.प्रमिला शुक्ल (से.नि. प्रधानाचार्या युगनिर्माण इंटर कालेज, मुहम्दी) के आवास पर यज्ञ-सत्संग का आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसमें क्षेत्र-निवासियों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया तथा यज्ञ में अपनी आहुतियाँ डालीं। बताते चलें कि कु.ऊर्मिला शुक्ला आर्य जगत के प्रख्यात वेदज्ञ पं. रामदत्त शुक्ल (भू.पू.मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ) के पौत्री है।

शान्ति यज्ञ- दि.२३.०२.१५ : एफ-७, लिबर्टी कालोनी, सर्वोदय नगर में पतंजलि योग समिति के निष्ठावान कार्यकर्ता और साधक श्री महावीर प्रसाद रावत की धर्मपत्नी श्रीमती सम्पत्ति देवी (६०) का आकस्मिक निधन हो गया। २३.०२.१५ को शान्ति यज्ञ वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। यज्ञ में पुत्र श्री अनुराग रावत, पुत्रवधू श्रीमती रावत तथा पुत्री पल्लवी एवं आकांक्षा ने भाग लिया तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।

शान्ति यज्ञ- दि.२६.०२.१५ : सूर्या सिटी, तकरोही इन्दिरा नगर की संरक्षण समिति के अध्यक्ष एवं जनप्रिय श्री कृष्णमोहन श्रीवास्तव (७०) का २४.०२.१५ को आकस्मिक निधन हो गया। २६.०२.१५ को उनके आवास पर शान्ति यज्ञ वैदिक विधि से आयोजित हुआ; जिसमें पारिवारिक जनों के अलावा बड़ी संख्या में क्षेत्र के नर नारी गण शामिल हुए। स्व.श्रीवास्तव के सुपुत्र श्री सचिन मोहन श्रीवास्तव ने सपत्नीक यज्ञ में यजमान का पद ग्रहण किया। यज्ञ के पश्चात् दो मिनट मौन रहकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234,
हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली)
पो0-इन्दिरानगर,
लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार– बचत खाता
बैंक– बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

'आर्य्य लोक वार्ता' के स्वामित्व आदि का विवरण

1. प्रकाशन का स्थान : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
2. प्रकाशन की अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : डॉ. वेद प्रकाश आर्य, राष्ट्रीयता : भारतीय, पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
4. प्रकाशक : डॉ. वेद प्रकाश आर्य, राष्ट्रीयता : भारतीय, पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
5. सम्पादक : डॉ. वेद प्रकाश आर्य, राष्ट्रीयता : भारतीय, पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
6. स्वामित्व : डॉ. वेद प्रकाश आर्य, राष्ट्रीयता : भारतीय, पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016

मैं (डॉ. वेद प्रकाश आर्य) एतद्द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर लिखा सब विवरण सत्य है।

–डॉ. वेद प्रकाश आर्य